॥ श्रीः ॥

कबीरउपदेश ।

जिसको

बेगमसरायनिवासी **ठाकुरदास**जीने श्रीमहन्त **दीनादास** साहेबकी आज्ञानुसार "ज्ञानप्रकाश" व "सुखनिधान" ग्रन्थोंमेंसे उत्तम २ वाणियोका संग्रह करके बनाया ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

(खेतवाडी ७ वी गली खम्बाटा लैन)

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमे

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९६७, शके १८३२.

प्रस्तावना.

सब संतमहात्माओं व सज्जन पुरुषोंको विदित हो कि, इससे वहुत पहले "ज्ञानप्रकाश" व "सुखनिधान" नामक दो. पुस्तकें बनीथीं उनमें वहुत स्थानोंमें अशुद्ध मिथ्या बचन लिखे हुए थे कि जिसके पढ़नेसे अनेक भ्रम व संशय उत्पन्न होतेथे सो अब सब संतोंका सेवक ठाकुरदास-साकिन बेगमसरायने उन दोनों पुस्तकोंमेंसे सही २ बानीबचन छांटकर और खूब शोधकर यह ग्रंथ "कबीरउपदेश" नामसे हमारी आज्ञानुसार बनायाहै कि, जिसके पढ़नेसे ज्ञानकी उत्पत्ति होवैगी. इसवास्ते सब महापुरुषोंसे निवेदन है कि इस ग्रंथको दया करके पढ़ैं जिससे स्वयं लाभ उठावें और मेरा परिश्रम सफल हो.

यह पुस्तक सर्वाधिकार सहित सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई को समर्पण करताहूं और कोई महाशय इसके छापने आदिका विचार न करैं, नहीं तो लाभके बदले हानि उठावेंगे.

सज्जन पुरुषोंका कृपाकांक्षी-

ता० १८ मार्च सन् १९०६ ई०

श्रीमहन्त दीनादास साहेब कबीरपन्थी,
स्थान निहालपूर, इलाहाबाद.

॥ श्रीः ॥

कबीरउपदेशकी-विषयानुक्रमणिका।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता।

सत्तनामसत्तकबीर ।

अथ ठाकुरदासविरचित-

कबीरउपदेश.
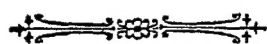
सांखी ।

प्रथमहि करता आप थे, वीज पिछे तेहिं माँहिं ।
ताहि लखै कोइ संतजन, सब संशय मिटजाँहिं ॥

छन्द ।

सतनाम सतगुरु ध्यान सतपद पुरुषहंसको सो कहो ।
सतलोकसो निःलोक पहुँचै अभयपद दर्शन लहो ॥
जिव लहै सुमिरन सारबीरा अंक अबिचल जो गहै ।
सतनाम सुमिरत काल डरपै मोक्षके न्यारा रहै ॥

सोरठा ।

समझहु रंक नरेश, कहो सँदेशा पुरुषको ।
जो गहु मम उपदेश, कहैं कबीर सो अमर होय ॥
चीनहु किरतम आदि, सन्त असन्त विचारहू ।
छाँडदेहु बकवाद, खोजहु अविचल कंथको ॥

रमैनी ।

सतगुरु सत्तशब्द सतनामा । सत्तपुरुष संतन सुख धामा ॥
सतसुकृतसतलोकनिवासी । दुखनाशकअविचलसुखरासी
अमीअनामसोसंत कहावै । अकह अलख सो आप रहावै॥
अविगतअकहिअमानसरूपा।अगहअडोलअबोलअनूपा।
अमर अजावन निःसोस्वादी।निःकामी निरमोह अनादी॥
आपहिनित्यऔरनहिंकोई । जमदारुन भंजन बहुसोई ॥
निःक्रोधी निरलोभ निःशंका । गुणातीत निर्बैर निरंका ॥
नहिं तिन पांचतत्त्व तन धारा।रहै अमान गर्भसों न्यारा ॥
प्रथमकर्ता मुख अमृतबानी ।जाकी रची सकल रजधानी॥
मैंताको निशिदिन गुणगाऊँ।गुरु प्रगट तेहि पलपल धाऊँ॥

साखी ।

जाही खोजत जुगगये, घटहीमें सो नूर ।
घाले गर्भगुमानमें, तेहिते परिगा दूर ॥

रमैनी ।

आप अखंडित उग्र शरीरा । सोहं सोहं सत्तकबीरा ॥
पांचतत्त्व गुण तीनों जापै । पूरण ब्रह्म बोलता आपै ॥
आपै तत्त्व आप गुणधारी । आप परमगुरु इच्छाकारी ॥
आपहि आप लखै ना कोई । ता संशय सब गये बिगोई॥
हम आपनपौ जुगजुग जाना । सबसे कहत रहे यह ज्ञाना॥
साँचा शब्द संत सब कीन्हा।सारशब्द कोइ बिरले चीन्हा॥

सत्तपुरुष सतगुर सो आहीं। गुरुगम सतगुरु नाम समाहीं॥
सतगुरु ध्यान जाहिपै होई। सो हंसा नहिं जाँय बिगोई॥
उनके ढिगसो हम चलिआये। जीवउबारन मोहिं पठाये॥
सतगुरुशब्द गहै जो हंसा। मेटों जन्ममरणका संसा॥

साखी।

जो कोइ मानै सत्तकर, चीन्हैं बचन हमार।
ताको बाल न बांकही, कहैं कबीर विचार॥

रमैनी।

यह घट रतन जतनकी खानी। घटमें आप २ घट ठानी॥
घटका खोज न काहू पाया। घटमें धर्म घटहिमें दाया॥
घटमें वेद घटहिमें बानी। सरबमूल घटहीमें आनी॥
घटमें चोर साहु घटमाहीं। पाप पुण्य घटमाहिं रहाहीं॥
घटमें निकट घटहिमें दूरी। घटमें रहै सजीवनमूरी॥
आदिग्रंथ घटहीमें कीन्हां। शून्य शिखर घटहीमें चीन्हां॥
घटमें तीर्थ व्रत ठहरावा। मूरतिपूजा घटमें रहावा॥
घटमें है वसुदेव कन्हैया। रामलछन औ चारौ भैया॥
घटमें मार जुद्ध घट माहीं। घटमें रावण लंका आहीं॥
घटमें ज्ञान ध्यान सब पावा। घटमें जोतसरूप जगावा॥

साखी।

अजबख्याल घटका रचा, जानै चतुरसुजान।
कहैं कबीर सो सन्त है, जेहि घट है पहिचान॥

सतगुरुवचन ।

रमैनी ।

कहैं कबीर हम काया सोधी । जेहि जस देखी तेहितस बोधी
अपने घटमें कीन्ह विचारा । देखा धर्मदासका द्वारा ॥
धर्मदास बाँधवके बानी । प्रेमभक्त भक्ती पर जानी ॥
दाया धर्म बहुत उर धरही । शालिगरामकी सेवा करही ॥
साधुसंतके चरण पखारै । कारि बिनती अस्तुति अनुसारै॥
संध्या आरति कर मनलाई । चित आशा बैकुण्ठ लगाई ॥
मनसा वाचा भजै गोपाला।तिलक देहिं तुलसीकी माला॥
द्वारिका जगन्नाथ हो आये । गया बनारस गङ्ग नहाये॥
भगवद्गीता बहु उर आई । प्रेम भक्तिरस पिये अघाई ॥
बोलै बचन महारसबानी । वृथाकथा कबहूँ ना जानी ॥

साखी ।

रामकृष्णको सेवही, तीर्थ ब्रतादिक मेटि ।
मथुरा परगट जब गये, भई कबीरसे भेंटि ॥

रमैनी ।

उदित बचन दाया सुखचैना।हँस मुसक्याइ कहैं बहुबैना ॥
धर्मदास तुम हो बड़ज्ञानी । महाभक्त सीतल सुखबानी॥
तुमसम भक्त न देखा आना । घर तुम्हार कौने अस्थाना ॥
कौन देशसे तुम चलिआये । जैहो कहाँ काह मन लाये ॥
काको भजन करो मनलाई । सो करता है कौने ठाँई ॥
पूँछत मनमें दुख जिन आनो।करता आदिपुरुष पहिचानो

जब लग करता चीन्ह न पावै।तबलग प्रेमभक्ति बहिजावै॥
काह भये तीरथव्रत कीये । काह तिलक मालाके लीये ॥
काह भये सिल पूजा पाठी । अंतसमय खप जावै माटी ॥
काह भये सुन भगवतगीता । चिंता मिटी न मनको जीता॥

साखी ।

जो करता ते ऊपजै, बसै सो कौने देश ।
ताको चीन्हों साहुजी, छाँड़ भरमका भेश ॥

धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

सुन धर्मदासअचंभो भयेऊ। ऐसा वचन मोहिं कसकहेऊ ॥
अहोसाधु तुमकोधों अहऊ।अनकटबचन वहुतबिधकहऊ
ताते हम नाहिं बोल बढ़ावा । जाते हरिसेवा चितलावा ॥
सुनो साधु तुम यह दृढ़ ज्ञाना। बाँधोगढ़ मोरा स्थाना ॥
बरन कसौंधी जातकी बानी। भजों राम दशरथका प्रानी॥
पारब्रह्म सेवों चितलाई । सीताराम सदा सुखदाई ॥
सेवा शालिग्रामकी पाऊँ । रामनाम निश्चय लवलाऊँ ॥
तीरथ बरत करौं दिनराती।दान पुण्य कीन्ह्यों बहु भाँती॥
सब भक्तनसे रहूँ अधीना । गुरुसेवा जिन दीक्षा दीना ॥
वृथा वचन कबहूँ ना कहेऊँ। प्रेमभक्तिमें निशिदिन रहेऊँ ॥

साखी ।

हमरे शंका कछु नहीं, हम सेवैं रघुनाथ ।
ध्रुव प्रह्लाद उबारिया, सो हरि हमरे साथ ॥

सतगुरुवचन।

रमैनी।

यह जग देख्यों अनकटरीती। तजैं साँच झूँठेसों प्रीती॥
जो धोखा तेहिं साँचा मानै। सत्यसार सो नहिं पहिचानै॥
आदिब्रह्म सो खोजै नाहीं। किरतम काल जो सेवै ताहीं॥
निज स्वामीको सेज न गहिये। जार चोर घर,संकट सहिये॥
जो रक्षक तेहि गहै न कोई। जो घातिक तेहि ध्यावे सोई॥
पूजैं पाषाण तीरथ न्हावैं। पाप पुण्य बस आवैं जावैं॥
दयाहीन नर पढ़ैं पुराना। पढि गुन अरथावैं बहुज्ञाना॥
आँथर अगुवा तेहिपुर माहीं। तेहि पाछे बहु अंधरा जाहीं
अगुवा सहित कूप पर जाई। काहु कहूँ को बूझै भाई॥
वुध मलीन अगुवा मति हीना। पढैं पुरान भेद ना चीन्हा॥

साखी।

कालहि जीव सताय, भक्ति करी सनकादि मुनि।
शिवब्रह्माविष्णुआदि, निशिदिन गावैं कालगुन॥

धर्मदासवचन।

रमैनी।

तुम खण्डचो हरिअहैन कोई। अरे साधु बड़अचरज होई॥
विष्णुसदृश को देविन देवा। तेहिको कहो कालकी सेवा॥
विष्णुतें अधिक और कोइ नाहीं। जमरा तिनके चेरा आहीं॥
शेषजाल पर लछमनबाला। जिनके शिर मोतिनकी माला॥

भगवद्गीता पुस्तक नाना । निशिदिन सुनै जपै भगवाना ॥
विप्रभेष षट्दर्शन हीको । महिमा कह्यो बिष्णुदेवन को ॥
सबै बिष्णुकी भक्ति दृढावै । तिरदेवा सब सृष्टि बतावैं ॥
शिव ब्रह्मा औ गुरूगणेशा । जाके सुमिरे मिटै कलेशा ॥
इन सब बिष्णुकी महिमा गाई । वेद पुराण सबै गोहराई ॥
रामनाम निज मोर अधारा । ताको मेटकिया अँधियारा ॥

साखी ।

खण्डनमण्डन क्यों करो, बोलो बचन सम्हार ।
यह रक्षक हैं जीवके, काल सँहारनहार ॥

सतगुरुवचन ।

रमैनी ।

अरे साहु मन धीरज करहू।तो हम कही सो गहि चितधरहू॥
बचन सुनत कस हुलकेहुसाहू।अपने हृदय न गमकरआहू॥
बिष्णुकथा तोहिं कहि समझाऊँ।अगमगम्यकीबात सुनाऊँ
तुम भाषे यह बचन सँजोई। बिष्णुते अधिक और नहिं कोई
आपै धनी बिष्णु जो रहते। किमयोनि जठरा दुख सहते ॥
जो तुम होते बिष्णुके दासू। तो नहिं काल बिष्णुको ग्रासू॥
सेवक हाथ न स्वामी घालै । जो बिगरी हो ताहि सँभालै ॥
ब्रह्माबिष्णुरुद्रसनकादिक । मुनिवरनारदऔसिधसाधक॥
देवदिवस बहु चोकरी जाई । रुद्रहु को पुनि जम धरिखाई॥
सबको जम धरि करै अहारा। लूटै सबै काल बरिआरा ॥

साखी ।

परखौ बचन हमार, कालजाल बारिआर है ।
कहैं कबीर पुकारि, सब धोखेकी मार है ॥

रमैनी ।

अहो साहुके पूत सयाना । एते दिन तुम सुनेउ पुराना ॥
हम नहिं खण्डैं खण्डै बेदा । पढ़ै पुरान न समझै भेदा ॥
वेद शास्त्रसब करै पुकारा । सब प्रलय एक पुरुष न्यारा ॥
करता पाथर कबहुँ न होई । यह संशय सब उन्हें बिगोई ॥
ब्रह्मा गये असंख बिलाई । कोटिन विष्णु काल धरि खाई ॥
तीन लोक जेता कोइ आही । काल निरञ्जन सबको डाही ॥
अरे साहु तुम चतुर सुजाना ॥ हिरदेकसन न विचारो ज्ञाना ॥
निरखोशब्द गहो निज बानी ॥ कर निर्वारि छोंड़ मनमानी ॥
यह त्रिगुणका जाल पसारा । त्रिविध कालकला बिस्तारा ॥
सो घर अब तुम खोजहु भाई ॥ जा पदपर सतजम नहिं पाई ॥

साखी ।

ऐसो काल स्वभाव, दयाहीन प्रचण्ड है ॥
बचै न कोइ जग आय, यह शरीरका दण्ड है ॥

धर्मदास बचन ।

रमैनी ।

साहेब अपना नाम सुनावो । कहांसे आये कहांको जावो ॥
को तुम हो सो कहो सुजाना ॥ कहां तुम्हरो निज अस्थाना ॥
जब तुम एकाएकी रहिया ॥ कौन वस्तु तुम भोजन करिया ॥

जब तुम रहे अकेल गोसांई । नारि पुत्र नाहीं जन्माई ॥
कैसे खेत बीज विस्तारा । कैसे अपना रूप सँवारा ॥
कौने कथी वेदकी बानी । कौने जोत पुरुष पहिंचानी ॥
तुरुक किताव कहांसे आवा । को बिहिश्त वैकुंठ बनावा ॥
निर्गुण निरञ्जन ॐकारा । यह विधवचन कौन उच्चारा॥
कौन नाम है सिरजनहारा । कौन नाम है प्राण अधारा ॥
एकेतें दूसर किन कीन्हा । इन सब कैसे तुमही चीन्हा ॥

साखी ।

तुम बड़ ज्ञानी पुरुष हौ, बचन कहों समुझाय ॥
त्रयदेवा प्रलय गये, तुम कहां रहे समाय ॥

सतगुरु वचन ।

रमैनी ।

अरे साहु हम तहां रहाईं । जम प्रवेश तहां सपनेहु नाहीं॥
जाके डर कांपै जमराई । अहो साहु हम तिन गुणगाई ॥
तीनलोक जब परलय होई । चौथलोक सुख सदा समोई॥
पिरथीआदि मोर अस्थाना । जब अकेल हम रहे निदाना॥
अमृतरूपी हमरी देहा । भोजनका मोहिं कौन सनेहा ॥
सब जुग हंसा रहे अकेला । इच्छा भई आपसे मेला ॥
मायारूप नारि होय आई । स्वाती बीज वीर्ज जिमि पाई॥
नाद विंदु एक संग समाना । तीन देवता उपजे आना ॥
सब मिल आपन रचना ठानी।वेद किताबसबकीनबखानी
हिन्दू तुरुक भये संसारा । रचे पुरान कोरान असारा ॥

साखी ।

एकै ते दूसर भया, निरंकारको थाप ॥
सुन्न सनेही सब भया, यही बोलता आप ॥

रमैनी ।

धर्मदास मैं कहूँ बिबेका । समझो नाम आदि है एका ॥
यासे भिन्न और है माया । जासे सृष्टि सकल उपजाया ॥
सत्तसरूप सत्तलोक निवासी।सकलहंसके पिउ अविनासी
सत्तपुरुष एक रोम अँजौरा । तुलै नरविशशि लच्छकरोरा
पुरुष सोभा का बरनों भाई । बरनत मोसों बरनि न जाई॥
तिन साहबका हम कँड़िहारा । जीवकाजको हम पग धारा
जीवनको ठग काल सतावै । बारम्बार कष्ट भुगतावै ॥
सत्तपुरुष तब मोहिं पठाये । जीव उबारन हम जग आये॥
जो जिव नाहीं चेतै भाई । बिरथा कालके मुखमें जाई ॥
अस कहि गुप्त भये प्रभुराई । धर्मदास महि परि मुरझाई ॥

साखी ।

चहुँदिशि चितवहिं चकितहोय, सुर्त गई कुम्हलाय ।
ना जानी वह कौन हैं, कहँवहँ गये बिलाय ॥

धर्मदासबचन ।

रमैनी ।

धरमदास साहेब मन लाई । बाढी प्रीति अधिक चितपाई
बिकल भये तन फिरैं उदासा । हमें छाँड़ कित कीनो बासा

जौ मैं जानत होत बिछोही। पलक नलावत निरखततोही
पलक देत कछु बिलम्ब नआई।कौन देशकहँवाँकोजाई ॥
मोहि कहा प्रभु दर्शन दीन्हा । गुप्त भये काहे पुनि छीना ॥
क्षोभ अधिक साहेब मन बाढे । जाय निकट यमुनाकेठाढे
विकलभये बिरहातन गाता । गिरै नयन जलकहै न बाता
पिया वियोगी त्रिया उदासी । कबहूँ घर कबहूँ बनवासी॥
भोजन भजन न भावै एका । सोच करै मन माहिंबिबेका॥
दिवस पांच पुनि ऐसे बीता ।निपट विकलबाढीअतिप्रीता

साखी ।

रैन गँवाई तलफके, दिवस गँवाई रोय ।
का बड़भाग सराहिये, साहेब मिलना होय ॥

रमैनी ।

छठये दिन अस्नाने गयऊ। कर अस्नान चेतवन कियऊ॥
पुष्पवाटिका रहे सोहावन। बहु शोभा सुंदर अतिपावन
आनेहु तोर पुष्प अरु पाती। चौक बिस्तार कीन बहुभाँती
तहाँ बैठि पूजा अनुसारा । प्रतिमा देव कीन बिस्तारा ॥
खोल पिटारी मुरति निकासा।ठाँव ठाँव धारि प्रगट प्रकासा
भेष छिपाय तहाँ पुनि आये। चौकाके ढिग आसन लाये
मन अनुराग ज्ञान चित लावैं। जपैं मंत्र और फूल चढ़ावैं
चंदन अरु अच्छत लै करही। सभिताहोयप्रतिमा पर धरही
चँवर डोलावैं घण्ट बजावैं। अस्तुति देव पढैं चितलावैं ॥
कर पूजा प्रतिमा सिरनाँवा। टारि पिटारी मूरति छिपावा ॥

साखी ।

धर्मदास करि बीनती, हाथ जोरि सिरनाय ।
तुमहीं दीनदयाल हौ, जो माँगें सो पाय ॥

सतगुरुबचन ।

रमैनी ।

अरे साहु तुम यह का करहू । पौवा सेर छटंकी धरहू ॥
धर्मदासहै नाम तुम्हारा । काहे न चीन्हों बचन हमारा ॥
आन दृष्टि करि चीन्हौ बानी ।पीतरपाथर पाखण्ड पानी ॥
सालिगराम हैं बोलनहारा । देह सरूप तिन साज हमारा
रामरामको सबै पुकारै । काल बलीन सभैको मारै ॥
सुनो साहु तुम बचन हमारा।तुम जिन होउ कालको चारा
जाको कहत नंदके लाला । सो तो फँसे कालके जाला ॥
करता राम भया मतिहीना । कपटमृगा काहे ना चीन्हा ॥
काहे नहिं करोसुरति घटमाहीं । बिन चीन्हें बूड़े भवमाहीं
नेति नेति कर बेद बखानी ।तबहूं काहु मरम न जानी ॥

साखी ।

सुनो साहु मति धीर, परखि ज्ञान हिरदे धरो ।
काल अपर बल बीर, बिन बिबेक कस पचि मरो ॥

धर्मदासबचन ।

रमैनी ।

कहो साधु तुमअचरजबाता।कहतनआवै कुछ बिख्याता ॥
बुद्ध तुम्हार जान नहिं जाई। कस अज्ञानसम बोलो भाई ॥

केहि कारन तुम प्रगट बैठावा। टारपिटारी मुरति छिपावा॥
हम ठाकुरकी सेवा कीन्हा। हमका गुरू सिखावन दीन्हा॥
ताका सेर छटंकी कहेऊ। अस नहिं कहो चेत चित धरऊ॥
जगन्नाथ परसे चितलाई। रामनाथ देखन को धाई॥
बद्रीनाथ केदारे गयऊ। बिन्द्रावन मथुरामें रहेऊ॥
परसे साम्हर औ हरिद्वारा। नीमखार मिश्री पगधारा॥
वारा बरस तीरथ हम कीन्हा। जाय द्वारिका छापा लीन्हा॥
इतने तीर्थ छेत्र होय आवा। साधु संतका एहि मत पावा॥

साखी।

माघ मास तिरवेनी गयों, औ काशी अस्थान॥
गया गजाधर परसऊ, गङ्गसागर अस्नान॥

सतगुरुबचन।

रमैनी।

अरे साहु हम नीक सिखावा। हमरे चित एक संशय आवा॥
एक दिवस हम सुनेउ पुराना। विप्रन कहा ज्ञान सहिदाना॥
वेद वाक्यतिन हमें सुनावा। प्रभुकी लीला सुनिमन भावा॥
कहैं आदि प्रभु अगम अपारा। अकह कहे नहिं रहै अकारा॥
तुम कर गहि ठाकुर कहँ धरहू। गुप्त प्रगट दोऊ विध करहू॥
एकै पुरुष जगतके ईशा। अमित माहिं बहुलोचन सीसा॥
इन साहेबके हाथ न पावाँ। सीसनयन मुख श्रवण न नावाँ॥
सुनेहु शीस प्रभु आय अकासा। पगपतालजासों करबासा॥

सो कस प्रतिमा पिटारिसमांहीं। अहोसाहु यह अचरजआही
गुरुगम एक सुना हम भाई। अहै संग प्रभु लखै न पाई ॥

साखी।

जलमें थलमें अशिनमें, और पवन आकाश।
जीव जन्तु मानुष पशु, सब घट कीन्ह प्रकाश ॥

रमैनी।

अहो साहु मैं बूझहुँ तोहीं। बचन एक सो तुम कहु मोहीं॥
यह घटमेंको बोलत आई। अरे साहु तुम चीन्हो ताही ॥
जब लगि ताहि न चीन्हों भाई। पाहन पूजत जन्म सिराई॥
कोटि कोटि जो तिरथ नहाहू। सत्तनाम बिनमुक्तिनसाहू॥
तुमको अहो कौन घट माहीं। ताहि साहु तुम चीन्हत नाहीं
सब माँहि औ सबसे न्यारा। को खेलै यह खेल अपारा॥
जो यह घरमें बोलै भाई। ताहि नामको खोजो जाई ॥
किन यह सुंदर साज बनावा। नाना रंग रूप उपजावा ॥
ताहि न भजो साहुके पूता। कस पूजो पाहन भ्रम भूता ॥
कहैं कबीर कहों मैं सोई। पाथर पूजे पाथर होई ॥

साखी।

पाथरकी नौका बनी, लोह सिक्ख है भार।
थोडे जलमें बूडिगे, कौन जाय मँझधार ॥

रमैनी।

धर्मदास यह गहि चित धारो। प्रीति साधु सेवा अनुसारो
पीतर पाथर पूजैं अंधा। जे गुरुज्ञानहीन मतिमंधा ॥

प्रभुको शिला रूप करि देखै । ताकर जीवनजन्मअलेखै ॥
शिला माहिं जो सुरति समावै।तन धरशिला जन्मसोपावै॥
जहँ आशा तहँ बासा होई । ताका मेटि सकै नहिं कोई ॥
चातकबिषमज्ञानबिनपानी। जितकितभटकैनापहिचानी॥
जिमकन्यारहिपिताकेपासा । कौतुककरिपूजैमनआसा ॥
धोखा कर कन्याको व्याहू । तब सब तजो मिला जबप्याहू
बिना खसमसे आस बुझाई । अस प्रतिमाको सेवहु भाई॥
जबलगिधोखब्रह्मरहिछाई । तबलगिज्ञानहृदयनहिंआई ॥

साखी ।

चेतन प्रतिमा पूजिये, कटै जुगन जुग पाप ।
जडपाहन पूजत फिरै, बूडिमुवा गड़गाप ॥

धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

धर्मदाससुनिचकृतभयऊ।पूजा करत बिसारि सब गयऊ ॥
हे साहेब मैं बलि बलि जाऊँ । बिछुडे संत सँदेश बताऊँ ॥
हे साहेब जस तुम उपदेशा । संत एक मोहिं कहा सँदेशा ॥
अगमअगाधशब्दउनभाषा।किरतमकालएकनहिंराखा ॥
तीरथ ब्रत सर्गुनकी सेवा । पाप पुण्य बहु कर्म करेवा ॥
पूजा पाठ एक नहिं माना । संतभक्ति बिन और न जाना॥
गुप्त भये पुनि हमको त्यागी । उनही दरसके हम बैरागी ॥
नाम तुम्हार कौन है भाई । सो भाखो मोसे प्रभुराई ॥

कौन देश है तुमरा थाना । कौन देशको कीन पयाना ॥
केहि साहेबका सुमिरन करहू।कहो बिलोइ गोइजिनधरहू

साखी ।

काल बधिक मानै नहीं, जीव सकल धरि खाय ।
वाको अमल बताइये, बाँचै कौन उपाय ॥

सतगुरुबचन ।

रमैनी ।

धर्मदास तुम चतुर सुजाना । तुमरो देख नीक हम ज्ञाना ॥
जिन भाषातोहिअगमकाज्ञाना। तिनसाहेबकेहमसहिदाना
सो वह हैं सतलोकके बासी । यह जग आवे रहै उदासी ॥
जन्म मरण नहिं बहुर समाहीं । इच्छारूपी देह उन आहीं॥
सदा रहै निःइच्छा सोई । गुप्त कला जग लखै न कोई ॥
वहप्रभु हैंअबगतिअबिनाशी।दासकहाय प्रगटभयकाशी॥
नाम कबीर जोलाह कहाये । चरचा रामानँदसों लाये ॥
पिंड प्राण जस मोर सरूपा । ऐसे उन साहेबका रूपा ॥
सत्तनाम भक्ती गोहरावा । दया क्षमा निश्चल कर गावा ॥
भाख्यो निर्गुन ज्ञान निनारा । वेद किताब न पावै पारा॥

साखी ।

काशीकंथ कबीर हैं, सकल पिण्डमें प्रान ॥
आदि अन्त औ मध्यमें, यह तज और न आन ॥

रमैनी ।

धर्मदास साधू मम नामा । संतनमें निशिदिन विश्रामा ॥
सत्तभक्तिमोहिनिसदिनभावै।संतनमिलिसतगुरुगुनगावै ॥
जो जिव करै साधु सेवकाई।सो मोहि अतिप्रिय लागैभाई॥
अरे साहु जो कारज चहहू।मोर सिखापन दृढकर गहहू॥
सत्तपुरुषसे प्रेम बढ़ावो । शब्द चीन्हके कर्म कमावो ॥
खुलै दृष्टि जब साहेब पावै । भाव भक्ति जब दास कहावै॥
जीवदया पर आतम पूजा । सद्गुरु भक्ति आश नहिं दूजा ॥
सत्त सदा मुख बोलै बानी । झूठी प्रेम कबहुँ नहिं मानी ॥
हिन्दू तुरुक दोऊ उपदेशा । मेटैं जीवन काल कलेशा ॥
हो गुरुमुखकी निगुरा भाई । ताहि बचन मोहि कहो बुझाई॥

साखी ।

निश्चय करके जानियो, वह स्वामी हम दास ।
जीव उबारन कारने, पठवा तोही पास ॥

धर्मदासबचन ।

रमैनी ।

हे साहब गुरु तो हम कीना । तिनतो मोहिं सिखावन दीना
रूपदास बटलेश्वर सोई । तिनके सुनो शिष्य हम होई ॥
तिन मोहि भेद यही समुझावा । पूजा सालिगरामकी लावा
गया गोमती काशी प्रागा । बहु कर पुण्य भजे अनुरागा ॥
लक्ष्मीनरायणमूरतिदीना । विष्णुपंजरसुमिरनचित कीना

बालमुकुन्द गोबिन्द मुरारी। गोपी बल्लभ कुंजबिहारी ॥
जगन्नाथ बलभद्र सुभद्रा। पंचदेव औ देव गजेंद्रा ॥
यहि कहिके परमोद दृढ़ाई। मूरति पूजि होहु मुक्ताई ॥
गुरुके बचन सीस पर राखा। बहुत दिना पूजा अभिलाखा
तुम दोउ भेष मिले प्रभु जबते। प्रियबानी मोहिंलागीतबते

साखी।

मन चकृत तन हरषभे, सुनिके नीत अनीत।
प्रिय लागो ब्रह्मज्ञान अति, उपजत हियमें प्रीत ॥

रमैनी।

धन साहेब तुम्हरी बलिहारी।मस्तक राखौं चरन तुम्हारी
बचनतुम्हारोप्रिय मोहि लागा।भागअधीनसाहेबरसपागा
तुम्हरे दरश भाग मम स्वामी। सरने राखो अंतर्यामी।
मन मलीन मल दूर बहावो। सार बस्तुका भेद बतावो ॥
कौन नामको निज परगासा।केहिपरराखोंनिजकर आसा
सो साहेब सब देहु बताई। शरन छोड़ि कतहूँ ना जाई ॥
मोरे तो तुम सतगुरु आहू। सारशब्द जिन मोहिं छिपाहू
उनहूँकी नहिं निन्दा करिहों। सतबिश्वासतुम्हारोधरिहों।
वे गुरु सरगुन त्रिगुण पसारा।तुम सतगुरु जिव तारनहार।
हमका निज सेवक कर जानो।सत्तकहोंनिश्चयकर मानो

साखी।

सोई भेद बताइये, जो मैं लागों तीर।
आवागवन निवारिये, जमको कागद चीर ॥

सतगुरु वचन।

रमैनी।

धर्मदास जो तुम मन इच्छा। देऊँ सारशब्दकी दिच्छा॥
तुमचलिजाउभवनतजिजबहीं।गुरुहिबूझआवोपुनितबहीं॥
जो तोहिं गुरु ना कहै संदेशा। तब हम तुम्हें देब उपदेशा॥
हमहूँ तो सतगुरु पहँ जाई। प्रीति तुम्हारी उन्हें सुनाई॥
जब सतगुरुकी आज्ञा मोहीं। सत्यसार समझावों तोहीं॥
बिन आज्ञा गुरु कहों न बाता। हम मँगता वे हमरे दाता॥
कपट रूप जिन बूझहु मोहीं। अजर अमर कर राखों तोहीं॥
सो तुम सत्त सत्त कर मानों। बचन हमार एक पहिचानों॥
अहो साहु अब आज्ञा पाऊँ। सतगुरुसे आशिष लै आऊँ॥
आज्ञा लै पुनि चले तुरंता। जिमि सरोज सम्पुट रवि अंता

साखी।

धर्मदास मुरझाय, भोजन छीन मलीन मन।
बैठे जहँ तहँ जाय, रैनदिवस होइ विकल तन॥

धर्मदासवचन।

रमैनी।

पहर एकलों चितवहिं ठाढे। उपजी प्रीति हृदय अतिगाढे॥
धरमदास चलिगे गुरु पाहीं। रूपदासके आश्रम जाहीं॥
मिलै जो भेष अनेकन बूझै। बानी बचन कहूँ नहिंसूझै॥
पहुँचे जाय गुरूके धामा। होय अधीन कीनो परनामा॥

तुमगुरुदेवशिष्यहमआहीं। परिचयज्ञान कहो हम पाहीं ॥
जीव मुक्त कौने बिधि होई । तन छूटे कहँ जाय समोई ॥
आदिब्रह्म सो कहां रहाई । यह घटमें को बोलत आही ॥
हमको हैं को हम घट होई । जग करता प्रभु कहँवाँ सोई ॥
रामनाम कहँवाँते आवा । नरक स्वर्ग जग कौन बनावा ॥
ताकर भेद कहो प्रभुराई । केहि बिधि काह करों सेवकाई ॥

साखी ।

सत्त असत सबहीं कहो, पूँछतहौं गुरु तोहिं ।
मनको संशय मेटिके, नाम बतावो मोहिं ॥

रूपदासवचन ।

रमैनी ।

धरमदास तुम भये अज्ञाना।कौन सिखाय तोहि अस ज्ञाना
सुमिरहु राम कृष्ण भगवंता । ठाकुर सेवा कर बुधवंता ॥
विष्णुपंजरलक्ष्मी नारायणन । प्रतिमापूजा मुक्तिपरायण ॥
मनबिच सुमिरहु कुंजबिहारी । है बैकुंठ जीव बनवारी ॥
पुरषोत्तमपुर बेगि सिधावो । जगन्नाथ परसी घर आवो ॥
गया गोमती काशी थाना । तीर्थ नहाय पुण्य है दाना ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश गोसाँई । यह तीनों जग रक्षक आहीं ॥
सूर्य देवताको जल देहू । इनसे सकल मनोरथ लेहू ॥
निराकार निर्गुन अविनासी । जोतसरूप सुन्नके बासी ॥
ताहि पुरुषको सुमिरहु नामा । तन छूटे पहुँचै निज धामा

साखी।

बाना बनाहै आदिका, करम भया विस्तार।
जीव शीव एकै भया, अकह कहै को पार॥

धरमदासवचन।

रमैनी।

धर्मदास बूझे गुरुबाता। क्रोधित होयके कहो न ताता॥
जिव रक्षक सो कहाँ रहाई। निराकार जिव भक्षक भाइ॥
लक्ष जीव नित खाय निरंजन।तिरसुत ताहि करै बहुगंजन
तीनों देव परे मुखकाला। सुर नर मुनि सब करे बिहाला
सूर्य चंद्रमा देव कहावे। इन सबको धर काल सतावे॥
किरतम भजै जो इन नहिं छूटै। सत्तनामविनजमधर लूटै
जहँ लग यह जग देखो भाई।परलय समय नाश होय जाई॥
पाप पुण्य जम जाल पसारा। करम बन्ध भरमै संसारा॥
नर बपुरेकी कौन चलावे। कौन ठाँव जिव सूचित पावै॥
तीनलोक वैकुण्ठ नसाई। अस्थिर घर मोहिं देहु बताई॥

साखी।

पानी पवन पिरथी नहीं, नहिं पावक आकाश।
करता भेद बताइये, कैसे कीन प्रकाश॥

रूपदासवचन।

रमैनी।

राम राम कहि कर पछताना। धरमदासको कैसो ज्ञाना॥
धरमदास लखिचकृत तोहीं।यह कुछ बूझि परै नहिं मोहीं

कौने बुद्धि तोर हरि लीना। बचन अशुद्ध सिखावनदीना॥
तीन लोकके करता जोई। ताहि भाषि जमराजा सोई॥
ब्रह्मा विष्णु महेश गोसाँई। ताहि कहत हौ जमधरि खाई॥
चाँद सुरज तारागन आहीं। तिनको कहो काल मुखजाहीं
तिनपुर में वैकुण्ठ सारिष्टा। सो तुम भाषत अहै निकिष्टा॥
तीरथ वरत पुण्य जो भाई। तिमि जमजाल ताहि ठहिराई
और अधिक सो कहा बताई। जो जाना सो नाह छिपाई॥
जिनतोहि अस बुध दीनो भाई। तिनहीको तुम सेवहु जाई॥

साखी।

हम सरगुन सेवा करैं, निरगुन भेद न जान।
धरमदास भावे नहीं, खोज करो गुरु आन॥

धरमदासवचन।

रमैनी।

धरमदास बिनवें करजोरी। चूक ढिठाय बकसो प्रभुमोरी॥
मनमें कछू न सोचो आना। हमसेवकतुमगुरुकरजाना॥
संशय रहा अधिक तन छाई। निकट तुमारे बूझन आई॥
तुमहौ गुरु वे सतगुरु मोरा। उन हमरो मन मैंगल तोरा॥
तुमगुरुकीनअभक्षछोडावा। उनमोहिंअगमगम्यबतलावा॥
ऐसे सतगुरुकी बलिहारी। भवसागरसे लेइ उबारी॥
हम तेहि पद अब सेउब जाई। जिन यह पंथ मोहिं बतलाई॥
धरमदास कीनो परनामा। मथुरा मग पहुँचे निज ग्रामा॥

केतिक दिना यही विध वीता। धरमदास चितबाढ़ी प्रीता॥
बहुतदिवसभेप्रभुनहिंआये। सेवक कौनराखिबिलमाये॥

साखी।

सुरति चहै प्रभु दरसको, मन चित बुधि हरलीन।
ना जानैं कब मिलैंगे, साहेब सन्त प्रवीन॥

रमैनी।

एक दिवस प्रभु ध्यान लगावा। सुरति सनेह प्रसाद बनावा
तृष्णा व्यापी क्षुधा सतावै। चौक लीप जेवनार बनावै॥
भई तुरंत विलम्बनलाई। लकडी धोयके फेरि मँगाई॥
चौकामेंआसनजोकीन्हा। छान,छान जल अदहन दीना॥
अतिपवित्रसे बनी रसोई। सालिगरामका भोजन होई॥
चौका माहिं अचंभो भाई। बहु चींटी चूल्हे झुरकाई॥
लकड़ी चिंउटी उठी अपारा। अंड सहित अग्नीमें जारा॥
अगुन छगुन चित करै बड़ाई। भात सकल चिउँटी होइ जाई
मनमें फिकिर भई बहुतेरा। उपजै बिनसै जीव घनेरा॥
धर्मन देख बहुत अकुलाने। महापाप लखि मनहि झुराने॥

साखी।

धरमदासको दुख भया, हरि हरि करत पुकार।
जिउ अनेक परलय भये, अस खाबे धिक्कार॥

रमैनी।

हरखि भई विस्मय तन छाई। केहि विधि कहांसे चींटी आई
लकड़ीको जल माहिं बुझाई। चूल्ह बुझाइ बहुत जलनाई॥

जो कुछ जरी सो जरि गइ भाई । जो बाचै सो लेहु बचाई ॥
जीव घात होइगा अधिकाई । यह भोजन हम नाहीं खाई ॥
जिंदा रूप धरे प्रभुराई । वृक्ष एक तरि आसन लाई ॥
आसन अधर देह नहिं छाया।अविगति लीला गुप्त रहाया॥
तब मनमें यह बूझ कराई । यह भोजन लै जिन्दा खाई॥
तत छिन धर्मन जिंदहि टेरा । तुम प्रसाद लेहु यहि वेरा ॥
जिंदा आय ठाढ़ पुनि भयऊ।पहरएकमुखचितवन कियऊ॥
धर्मदास दीनों परसादा । तब जिंदा कीनो सम्बादा ॥

साखी ।

जिन्द रूप साहेब मिले, मेटा भरम विकार ।
कर्म जँजीरा काटिके, संशय दिया निकार ॥

जिन्दाबचन ।

रमैनी ।

धर्मदास तुम चतुर सुजाना । जीव दया काहे ना जाना ॥
मति तुमार कस गै बौराई । दया धर्म हिरदे बिसराई ॥
अरे साहु कस धरो छिपाई । चूल्हे मां चिउटी झुरकाई ॥
कीना नेम अनेक अचारा । लकड़ी धोय रच्यो ज्योंनारा ॥
निरख परख तुम कहे न लीना।ना तुमरे देवता कहिदीना॥
घात कीन तुम जीव अनेका । सो प्रसाद हमरे सिरटेका ॥
जब लग जीव दया नहिं आवै । तीरथ भरमै जन्म गँवावै ॥
पूजे पाहन भूखन मरई । आतमघात किये ना तरई ॥

अस नर होवै बधिक समाना। पड़े काल मुख पढ़त पुराना।
दशरथसुत श्रीराम कहाये। तिनहू जीव अनेक सताये ॥

साखी।

त्रेतायुगमें वालिको, वैर देह धरि लीन।
जिन जिन जीवन मारिया, तिन सब बदला लीन ॥

रमैनी।

निराकार जेहि वेद बखाना। सो कालौको मरम न जाना॥
तिनके सुत हैं तीनो देवा। सब जग करै कालकी सेवा ॥
त्रिगुणजालसबजगतफँदाना। गहैनअविचलपुरुषअमाना॥
जाकर यह जगभक्ति कराहीं। जमदै धोखा फंद डराहीं ॥
प्रथमै भये असुर जमराई। बहुत कष्ट जीवनको लाई ॥
जीवन बहु विधि कीन पुकारा। दूसर कला काल पुनधारा॥
जीव जानि यह धनी हमारा। धर अवतार असुर संहारा॥
प्रभुता देखि धरै विश्वासा। अंतकाल पुनि करै गिरासा
काल तो भेष दयाल बनावे। दया हढायके घात करावै॥
वानी वचन न बूझै एका। विनसै जीव करमके टेका ॥

साखी।

ऐसो काल कुकाल, सपनेहु दया न जानिया।
लख चौरासी डार, जीव करै सनमानिया ॥

रमैनी।

द्वापर देखा कृष्णकी रीती। धर्मदास यह नीति अनीती ॥
अर्जुन कहि तिन दया हढावा। तेहि पीछे बहुबँध्योअथावा॥

जीवघातकर दोष लगावा । पण्डवका बहु काल सतावा ॥
वीर सूरमा गये हेराई । छल अनेक कीनो जमराई ॥
बहु गञ्जन जीवनको कीन्हा । ताको कहैं मुक्त हरि दीना॥
पतिव्रता विंदाव्रत धारा । तेहि शाप पाहन अवतारा ॥
बलिसों छलबल कीन बहूता । पुन्न तासु कीनो अजगूता॥
छल बुध दीनों ताहि पताला । कोइ ना लखै प्रपंचय काला
तीनों लोक तीनों डिगकीना।आधा डिगनृपदान न दीना॥
देहु नृप पुनि आधा पाऊं । नहीं तो पुन्न प्रभाव नसाऊं ॥

साखी ।

करो दान तुम नृपतिजी,ऐसे च्तुर सुजान ।
महिमा तुमरी होयगी, नहीं जगतमें हान ॥

रमैनी ।

तबले पीठ नाप उन दीना । हरिने ताहि पताले कीना ॥
आँधर जीव देख नहिं चीन्हा । कहैं मुक्त मारग हम कीन्हा॥
तासों कहो लाभ किमि होई । तेहि सेवै जो जाय बिगोई॥
औ हरिचंदकेर जस लेखा । धरमदास चित करो बिबेका ॥
जती सती त्यागी बहु भयऊ।सबको कालविगुरचन कियऊ
काहूको ब्रत हढ नहिं राखा। मुक्तिनके दाता नर भाखा ॥
स्वर्गहि धोख नरक सब जाहीं।सारशब्द कोइचीन्हतनाहीं
पाण्डव सम जग को ब्रतधारी । नरक वास ताका लैडारी ॥
नर्कवास नहिं छूटै भाई । महानर्क भग जेठरी खाई ॥
यह संसार बनो दुखदाई । माया फाँसमें आन फँसाई ॥

साखी।

करनी भोगै आपनी, फेरि धरै अवतार।
जीव विचारा क्या करै, छुटै न बारम्बार॥

रमैनी।

भक्त अनेक जगतमाँ भयऊ। ताका तो वैकुंठ न दयऊ॥
जग आँधर हिय गमनहिं कीना। सबैआसवैकुंठहि दीना॥
विष्णु सरीके जग कोइ नाहीं। बहू भगत किमि बरनौंताहीं॥
करमके बस पुनि नरक भोगावै। ते वैकुंठ वासनहिं पावै॥
सो वैकुंठ चाहि नरप्रानी। यह जम छल विर्लयपहिचानी॥
जो जस करम करै संसारा। सो भुगतै चौरासी धारा॥
मानुष जनम बड़े तप होई। नाम बिहूनझूँठ तन खोई॥
नर्कनिवारन नाम जो आहीं। मूरुखलखै ताहिकोनाहीं॥
ताते जम धरि फेरि सतावै। नाना जोइन जीवभटकावै॥
विर्लय सारशब्द पहिचानै। सतगुरु संगसतनाम समानै॥

साखी।

सुनि धर्मदास सुजान, सत्यशब्द पहिचान लो।
और सकल जमजाल, सतगुरु सम नहिं आन को॥

धरमदासवचन।

रमैनी।

धरमदास चित शंसय आना। यह को अहै हृदय अनुमाना॥
कहा कहूँ जिंदाका भाई। जात मलेच्छ कथै चतुराई॥

कै करता मैं कै भगवाना । नाम मोर इन कैसे जाना ॥
हेजिन्दामोहिंअचरजभयऊ।लीलादेखिथकितहोयगयऊ ॥
केतिकलखीसमुझनहिंआवा । यहलीलातुमजाननपावा ॥
चिउँटी जरी सही प्रभु मोते। सो अदृष्ट नहिं अंतर तुमते ॥
सो कौने बिध जानेउ ताता।और प्रसाद चींटी होयजाता ॥
जोर पानकर बूझौं स्वामी । कहो कृपा करि अंतर्यामी ॥
साहेब नाम काह तुम आहीं । पर्चय नाम कहो मोहिंपाहीं॥
औ सतगुरु तुम केका कहऊ। वोह प्रभु कौने देश तुम रहऊ

साखी ।

कौन देश साहेब बसै, कौन निरंजन जाल ।
कौन उपाय है जीवका, पडै नहीं मुख काल ॥

जिन्दा बचन

रमैनी ।

धरमदास जो बूझै मोहीं । सुनौ सुरति धर कहौं मैं तोहीं ॥
धरमदास यह सतगुरु लीला। धन सतगुरु जिनखेलगहेला
जिन्दा अहै नाम सुन मोरा। जिन्दा भेष खोज कर तोरा॥
हम सतगुरुके सेवक आहीं । सत्यलोकमें सदा रहाहीं ॥
सकल जीवके रक्षक सोई। सतगुरु भक्त काज जिउ होई॥
सतगुरु सत्त कबीरहि आहीं । गुप्त रहैं कोइ चीन्हत नाहीं॥
सतगुरु आय जक्त पगधारी। दासातन धारि शब्द पुकारी ॥

काशी रहे परखि हम पावा। सत्य नाम उन मोहिं लखावा॥
जमराजाके छल हम चीन्हा। निरखि परखि भे जमते भीना॥
तीनलोक जो कालसतावै। ताको सब जग ध्यान लगावै॥

साखी।

धोखा धोखी आसमें, बूड़िमुवा संसार।
जीवन पड़गये करम बश, कब होवै निस्तार॥

धर्मदासवचन।

रमैनी।

हे साहेब तुमको सिर नावा। तुमते बहु परिचय हम पावा॥
भेष तीन दर्शन दिय मोहीं। तीनों भेषमें जानौं तोहीं॥
सतगुरुप्रथमदरशमोहिंदीना। मोकाआयकृतारथकीना॥
भेख छिपाइ बहुरि वे आये। सार बचन उन मोहिंछिपाये॥
तीसर तुम आये तनधारी। हम हैं तुमरे दरस भिखारी॥
तुमतो मोहिं परम सुख दीन्हा। भेद अभेद सबै हमचीन्हा॥
बचन एक प्रभु कहौं बिलोई। कहो दास पद धरो न गोई॥
चिउँटी जरी सही मोहि पाहीं। सो प्रसाद तुम चाखोनाहीं॥
औरौं कबहुँ होय जो ऐसे। तो प्रभु कहो बनैधौं कैसे॥
चेत अचेत पाँव तर परई। तौ वह दास कवन विधि तरई॥

साखी।

उन साहेब तुम एक हौ, दूसर भेद न जान।
सुनत हिया पुलकित भयो, बचन अमोलक मान॥

जिन्दा वचन ।

रमैनी ।

नाम पान चर्णोदक सीता । कहैं कबीर भक्ति दृढ़ कीता ॥
गुरुसेवा संतन सनमाना । जिउ दयाल हैं मोक्ष अमाना ॥
जग महँ जीव घाट बहुतेरा । होय वधिक सिर पाप घनेरा ॥
दया न लावे कर जिवघाता । खेल शिकार मगन मन माता
मार मार तन करत अहारा । बहुतक जिव पर्लय करडारा ॥
जीवघात बहुतै दुख पावै । जनम जनम तेहि काल सतावै
काल देह धरि बिष्ठा खाहीं । जनम अनेक न बिष्ठा माहीं ॥
शूकर खान जनम तेहि पावै । मीन मास मद ताका भावै ॥
साध देव भक्ष अंकुर आहीं । मीन मास मद राक्षस खाहीं ॥
कोटिक जप तप पुन्न कराहीं । जीव दया बिन मुक्ति न पाहीं

साखी ।

तजै अभक्ष अहार, जीव दया चितमें धरै ।
उतरै भवजल पार, हंस गवन साहेब करै ॥

रमैनी ।

धरमदास निःसंशय रहहू । सतगुरु ध्यान चित्तमें धरहू ॥
जान जीव कबहीं नहिं मारो । बहुर साँस दाया उर धारो ॥
साधन सेवा तन मन वारो । नाम ध्यान धरि काज सँवारो
साधन चरन केर परतापू । मिटै दोष दुख करम जो दापू ॥
सत्यनामको चितमें धरहू । जीवन मुक्त अभवजल तरहू ॥

तीर्थ वर्त्त बहुकरम कराहीं । सत भक्ती बिन तरिये नाहीं ॥
कोटि तिरथपद संत निवासा । अंध जीव नाहीं विसवासा ॥
गुरुते द्रोह तजै बकवादा । गुरु निन्दै नहिं पावै स्वादा ॥
सतगुरु चरनोदक प्रियलेई । निश्चय लोक पयाना देई ॥
ताकर फल कछु बरनि न जाई । गहि विश्वास करै सेवकाई ॥

साखी ।

जे गृह संतन पग परै, सो सतलोक निवास ।
गुरुही ब्रह्म अखण्ड है, सतगुरु पद विसवास ॥

रमैनी ।

वचन हमारो हिरदे धरहू । संशय तजि कुछ भोजन करहू ॥
आतम कष्ट कबहुँ ना दीजे । रुचित प्रेम रसअमृतपीजे ॥
हरि ना मिलै अन्नके छाँड़े । हरि ना मिलै हटनगृह मांड़े ॥
हरि ना मिलै द्वार घर त्यागे । हरि ना मिलै रैनदिशि जागे ॥
हरि ना मिलै संखधुनि गाजे । हरि ना मिलैआरतीसाजे ॥
हरि ना मिलैं कथाके बांचे । हरि ना मिलैं भक्तिविन सांचे ॥
ऐसे हरिहैं दीन दयाला । सेवक जान करैं कृपाला ॥
सब जीवनके हैं रखवारा । अन्तर्यामी हैं संसारा ॥
सो साहेबकस बंधनपरिया । भूखप्यास बनमध्येफिरिया ॥
मानुषमूढ वचन नहिं मानै । अकरमकर्म नहींपहिंचानै ॥

साखी ।

अजर अमर वह लोक है, दया धर्मकी खानि ।
धरमदास गहु प्रेम पद, सत्तपुरुष पहिचानि ॥

रमैनी ।

धर्मदास तुमको समझाऊं । सत्तसारका भेद बताऊं ॥
हंस दशा अस होवै भाई । नाम गहै सतगुरु पद पाई ॥
जहां फूल तहँ आवै बासा ॥ जहँ साहेब तहँ संत निवासा॥
एक तत्त मन नाम समावै । दाया छिमा सत्त मन लावै ॥
प्रेम सहित साहेब चित लाई । सत्तनाम गहिलोकहि जाई॥
सत्तनाम सो विनसै नाहीं । तिरगुन जालसे न्यारा आहीं ॥
तिरगुन त्याग चौथा पद भेंटै । जनम मरनको संशय मेटै॥
चौथापदसतनामअमाना।विरलाकरपदनिश्चल ध्याना ॥
सत्तनाम है सार अनूपा । प्रेम प्रीति गुरु दरसै रूपा ॥
नख शिख सतपद दरसै जबहीं।जीव जठर आवै नहिं कबही

साखी ।

सतलोक सतपुरुष है, जिव कायाके बीर ।
लिख साँचा हो भरम तजि, बूझै बचन कबीर ॥

रमैनी ।

सतपद जिन एकै मन लावा । शब्द दरस जिन निश्चयपावा
सुरति निरति सतगुरु पद परसै।षोड़श भानुचंद्र छबिदरसै
हंसपती सिंगासन सारा । हंसन मिलि सुख सदा अहारा
पुरुषदरसलोचनछबि जाही।पुरुषबचनहियसुनतिअघाही
अंध काल तहँ कबहुँ न होई । सदा अँजोर अमरपुर सोई॥
दीप अठासी सहस रहाहीं । हंसा निश्चल राज कराहीं ॥
निराकार जम तहाँ न जाई । तिरदेवाकी कौन चलाई ॥

सतगुरु शबद गहै जो कोई । ताहि देशको पहुँचै सोई॥
सार शब्द संतनसे लूटै । आवागवन पलकमें छूटै ॥
असुर अभक्षसों रहै नियारा।तज कुसंग सतसंग पियारा॥

साखी ।

बिरलै जीव पतंग, देख जोत दीपक जरै ।
निर्नय है सतसंग, कहैं कबीर जीते मरै ॥

रमैनी ।

धरमदास तुम दरशन पावा । शब्द गहै सो जीव मुकतावा
जग फंदा तब निश्चय छूटै । जम राजासों तिनका टूटै॥
अमी अंक पर्वाना पावहु।सुमिरन नाम ध्यानचित लावहु
एहिते आसा औ सब छाँड़ो। सतगुरु चरन नेहि चित माँड़ो
नाम कबीर जपो दिनराती । तजहु भरम करम कुल जाती॥
प्रतिमा धोखा दूरि बहावो।आतम पूजि नाम चित लावो॥
तब जमराजा तोहिं न पाई । नाम परताप काल मुरझाई॥
और जगतका झूँठा धंधा । आस लगाय गिरै नर अंधा ॥
खप खपके केते बिललावैं । करमहीन नर आवैं जावैं ॥
होवै जीव काज जब तोरा । निश्चय बचन मान दृढ़ मोरा ॥

साखी ।

धरमदास लेउ जान, सुन्नसरूप मनको अहै ।
जिन्दा वचन प्रमान, रूपरेख बिन कस गहै ॥

धरमदास बचन ।

रमैनी ।

हे साहेब मैं तुम पद धरिहौं । तुमते कछू न दुविधा करिहौं ॥
अबमोहिचीन्हिपरीजमबाजी । तुमते भया मोर मनराजी
मोरे हिय परतीति समाऊ । भूले जीव होय मुक्ताऊ ॥
तुमहीं सत्तकबीर हौ स्वामी । कृपा करहु प्रभु अंतर्यामी ॥
ए प्रभु देव परवाना मोहीं । जम तृन तोरि भजौं मैं तोहीं ॥
मोरे नहीं औरसे कामा । निसदिन सुमिरौं सतगुरु नामा ॥
प्रतिमा मूरति देब बहाई । सतगुरु भक्ति करब चितलाई ॥
अरब खरब सर्बस सब तुमहीं । तुरत उबारो बूडत हमहीं ॥
संतन सेवा दृढ़ कर करिहौं । वचनसिखापन निश्चय धरिहौं
जो तुम कहो करौं मैं सोई । हे प्रभु दुतिया कबहुँ न होई ॥

साखी ।

नामभेद परगासिये, उतर जाय सिर भार ।
बूड़त हंस उबारिये, जुगन जुगन उद्धार ॥

जिन्दाबचन ।

रमैनी ।

धरमदास तुमका मुक्ताऊँ । निश्चय जमसे तोहिं बचाऊँ ॥
निर अधार सतमानअधारा।शब्द सुरति जगमुक्तिबिचारा
सुरति डोर चढ़ि उतरो पारा । शब्द बिचार करो निर्वारा ॥
दे पर्वाना हंस उबारौं । जनम मरण दुखदारुण टारौं ॥

आज्ञा देहु मोहिं धर्मदासू । हम जावै सतगुरुके पासू ॥
सतगुरुसे आज्ञा लै आई । हंस उबार करौं मुक्ताई ॥
बिना गुरू आज्ञा ना होई। यह परमान उचित है सोई ॥
अपने मनधीरजकर राखो।निस दिन नाम अमीरस चाखो
आउब जल्द बिलम्ब न पाई । साहेबसे पर्वाना लाई ॥
लै परवाना करो सुप्रीती । कहैं कबीर चलो जम जीती ॥

साखी ।

धर्मदास मत धीर, राखो आसा नामकी ।
तन मन धारो धीर, होइ हो साहेबधामकी ॥

धरमदासबचन ।

रमैनी ।

हे प्रभु तोहिं जान ना देहौं । नहीं आवो तो प्रान गवैंहौं॥
हाथ रतनमन केहि विध डारूँ।यहमूरुखनिजकाज बिगारूँ
मोरे प्रान पिआर तुम आहू । केहि कारन अंते चलिजाहू
यह कहि धरमदास पल लावा । सतगुरु गुप्तभयेतेहिठावा
धरमदास पुहुमें परधारे । सतगुरु कहि बहुकीन पुकारे ॥
मो सम को जग अहै अभागी । छुटे न देह ठगौरी लागी॥
जस फन मन बिच जात हेराई।बिकलफिरेजितकित बौराई
यही हाल सतगुरु विन मोरा।कस पल दिह्यों मंदमतिमोरा
धरमदास मन धीरज कीना । भली शिखावन जिन्दा दीना
जिन्दा रूप यही हम देखा। कहत वचन मुख बहुत विवेका

साखी ।

सत्त सत्त सबही कही, जान पड़ी निजसार ।
जिन्द नहीं वह पुरुष है, भाषत वचन अपार ॥

रमैनी ।

धर्मदास बाँधो चलि आये। बाल गोपाल सहित सुखपाये
कितिक दिवस मन कीन विचारा। देऊँ इच्छा कर भंडारा॥
साहेब संत सनेही आहीं । संतन तजि अंते नहिं जाहीं ॥
अस हिय ठानि भवन चलिगयऊ।संतप्रसादचेतवनकियऊ
संत समाज जहाँ गमपाई। तहँ लगि सबका न्योतबोलाई
आये बैरागी ब्रह्मचारी। जोगी जंगम दूधाधारी ॥
बहुतपसी आये संन्यासी। जटाभभूत सुन्न विश्वासी ॥
भेषछिपाइ साहेब पुनि आये। धरमदास गृहआसनलाये॥
बाजै ताल मृदंग निसाना। शंख नाद धुनि करत बजाना
भाव भक्ति सबहिनको कीना। इच्छा भोजन सबको दीना

साखी ।

करी दण्डवत जोर कर, संत समागम जहँ अहो ॥
सत्तपुरुष केहि ठौर, सत्तलोक महिमा कहो ॥

रमैनी ।

सबको ज्ञान परखिधर्मदासा। सुनैध्यानधरि हृदय न बासा
कोई तीरथ मुरति बतावै । कोई रामगोपालै गावै ॥
कोई केवल नाम दृढावै। कोई शंकर विष्णू धावै ॥

कोई कहै त्रिगुण आराधो । कोई कहै बरत तन साधो ॥
कोई कहै प्रतिमा सेवा । कोई कहै तिरथ तप मेवा ॥
श्रीकृष्ण संन्यास बतावै । परमहंस अविनाशी गावै ॥
जोगी अलख पुरुष उच्चरई। जिन्द अल्प खोदाय सुमिरई॥
किरतम भक्ति सबै दृढावै । सत्यसार पद नहीं लखावै ॥
तब अकुलाय साँस धर जोवै । परगट नहीं गुप्त हिय रोवै ॥
फिरत आश्रम होत निरासा।चौमुख चितवहिं परम उदासा

साखी ।

एक भाँति कोइ ना कहै, नानाबिधि परिचण्ड ।
धर्मदास बिश्वास बिन, सब जाना पाखण्ड ॥

रमैनी ।

समुझ पडी सबके मन माहीं । जिंदमता काहू पे नाहीं ॥
यह तो करमकाण्ड दिखलावैं । नाना रूप भेष बतलावैं ॥
सार बचन मुख कहै न कोई । अंतरगतकी मैल न धोई ॥
उनको बचन महारसबानी । जिंद पीर कोइ आलिम आनी
वहसाहबकाज्ञानहैन्यारा । सुनतलगैमनअधिकपिआरा ॥
जाय कीन संतन सनमाना । यथा जोग पूजा परधाना ॥
बिदा कीन संतन करजोरी । बखसहु चूक जो अवगुन मोरी
सबय संत मिल बाट सिधाये । धरमदास सतगुरु चितलाये
जिन्दा बचन याद जब कीन्हा । अंतरगतमें बहु सुखचीन्हा
ऐसे बरस दिना घर रहेऊ । फेरि सुरत काशीकी कियऊ ॥

साखी ।

सब भेषनमें ढूँढ़िया, पुरी न मनकी आस ।
मनमलीन निरखत चले, जिंददेश जहँ बास ॥

रमैनी ।

धरमदास काशी चलि आये । चहुँदिस दरसबहुत पगधाये
दिसा एक पुनि चितवन कीन्हा।मूरत एक भिन्न तहँ चीन्हा
भक्तरूप मुख अमृत वानी । नाम कबीर जगत गुरुज्ञानी ॥
बिमल बिमल साखी पद गावै। जुरी भीर सबको समझावै॥
पंडित ज्ञानी सब हिहरावे । थाह कबीर कोई ना पावे ॥
धरमदास तहँ निरखैं ठाढ़े । चरचा करै बहुत बिधि गाढ़े ॥
अपने मनमें कीन बिचारा । इनका ज्ञान महाटकसारा ॥
दोऊ दीनकी बात सुनावैं । इनका भेद न कोई पावे ॥
कबहुं भगत कबहूँ होय जिन्दा । दोनों राह चलावै बंदा ॥
धरमदास चीन्हा मनमाना । जिन्द पीरते और न आना ॥

साखी ।

धर्मदास निरखत भये, साध मता गम्भीर ।
शब्द अखंडित सुननको, जुरि आई बहुभीर ॥

सतगुरुवचन ।

रमैनी ।

प्रगटी ज्ञान रतनकी खानी । सारशब्दनिज अमृत बानी॥
यह तो घटमें कीन बिचारा । धर्मदासको बदन निहारा ॥

अरे महाजन कहँ पगधारो। छगुन छगुन तुम काह निहारो
कहिये क्षेम कुशल है नीका। सुरत तुम्हार बहुत हम देखा॥
धरमदास हम तुमको चीन्हा।बहुत दिननमें दरशन दीन्हा
बहुतके ज्ञान किया हम तुमहीं। मथुरामें तुम भेंटे जबहीं॥
भगतरूपतुम हमजिन्दकेरा।सुधिकारि देख सुनौ मति धीरा
धरमदास तुम संत सुहेला। मोहिं दरशनको कीने मेला॥
इच्छा सुफल भयो शुभ तोरा।अब तुम दर्शन पायो मोरा॥
धरमदासनिश्चय मम बानी।कितहुँ न जाव सत्य हियमानी

साखी।

भले किये दरशन दिये, बहुरि मिले तुम आय।
जो अबकी हमसे मिलै, जुगजुग बिछुड़ न जाय॥

धर्मदासबचन।

रमैनी।

सुनिधर्मदास हिये सुख भयऊ। सन्मुखधाय पाँव गहिपरऊ
धाय चरन गहिअतिअनुरागा।बूंदपायचात्रिक जिमिपागा
प्रेम सहित उठि अँग भरि लीना। दाया सिंधु चित्तभर दीना
धरमदासको सुखभा भारी। धन करता बलि जाउँ तुम्हारी
जुग पद गहे प्रीति चित लागी।हेसतगुरु मोहिंकीनसुभागी
हे प्रभु दरसन जो नहिं पावत। तो निश्चय हम प्रान गँवावत
जो कोई चीन्हैं चितमन लाई। संशय ठौर पाप मिटि जाई
हे साहेब पूछौं करजोरी। साँच वस्तु नहिं राखहु चोरी॥

कपट भेद हमसे तुम कीना। इतने दिवस दरस नहिं दीना
भूलभरमबहुतै दिन रहिया। विरहबियोगजाय ना सहिया॥

साखी।

प्रथमै मोहिं मथुरा मिले, बहुत बाद हम कीन।
सब सांची सांची कही, मन हमार हर लीन॥

सतगुरुवचन।

रमैनी।

धर्मदास चेतौ चितलाई॥ पांचतत्त्व अब तुम्हें चिन्हाई॥
पावक पिरथी पानी पवना। सरवमूल बोलत है तवना॥
रजो सतो तम तिरगुन आहीं। सो हमहीं कोइ दूसर नाहीं॥
सब हममें निज हमरी साजा। पिरथी संजोग बीज उपराज
पानी पवन सरूप हमारा। आवत जात तत्त असवारा॥
तत हमार हम तत्ते माहीं। यामें फेरफार कछु नाहीं॥
इच्छासे घर मानुष रूपा। आदि अंतमें एक सरूपा॥
धरमदास निरखोनिज नैना। व्यापक सत्तपुरुष सुखचैना॥
आपहि करता सत्तकबीरा। दया धरम भगती गम्भीरा॥
जो जो इच्छा भई हमारी। सकल बीज उपजे उजियारी॥

साखी।

यह स्वभाव सब तत्तका, इच्छा बीज हमार।
जो चाहा सो सब भया, चीन्हों सिरजनहार॥

धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

साहेब आदि पुरुष हो जोई । तुमते करता और न कोई ॥
भली बनी हम दरसन पावा । पेड़ मूल सगरौ चलिआवा ॥
बीज बृक्ष तुमहीं जो आहीं । सब विस्तार तुम्हारेमाहीं ॥
सत्त कबीर निजनाम तुम्हारो।प्रबल हंस बड़ भाग हमारो॥
करता आदि पुरुष हम पावा । मन पसार पूछौं जो भावा ॥
तुमते अधिक कौन है देवा । अब हम करब तुम्हारी सेवा ॥
सतगुरु सम नहिं देखों आना।पूजसिलामम जन्म सिराना॥
कबहीं कहो न मुक्त सँदेशा । तुम मेटे हौ कालकलेशा ॥
अब प्रभु कीजे वेगि तुरंता । हंस उबारो अविचल संता॥
जमसों सतगुरु देहु बचाई । बिछुड़े हंस लेहु मुक्ताई ॥

साखी ।

साहेब समरथ जक्तमें, बन्दीछोर कहाय ।
दे परवाना सरनहूँ, दीजे रूप लखाय ॥

सतगुरु बचन ।

रमैनी ।

धरमदास चाहो परवाना । बाँधवगढ़कर साज समाना ॥
चंदन चौका पर्मल लावो । कलसा पल्लव पाँच धरावो ॥
पान नारियल उत्तम लाना । मेवा अष्ट और मिष्टाना ॥
सेत पुष्प कदली पनवारा । आनहु बेगि न लावो बारा

सेत सिंघासन धरो बनाई । झारी दल कपूर भरलाई ॥
घृत वसन पुंगीफल चारू । साजो थार जोत पुनि वारू ॥
धरम न जो इतना नहिं होई । गुरु निज सक्तकरैपुनिसोई
हम निः इच्छा चाहत नाहीं । है मरजाद गुरुसेवा आहीं ॥
साधु संतको लेहु बोलाई । मंगल चारु करो चितलाई ॥
यह विधिसे तुम करो समाजा।तब होवै तुम्हरो जिव काजा

साखी ।

सतगुरु साहेब कबीर,बांधवगढको पग दियो ।
धर्मदास संग वीर, मन मलीन हिय सुख भयो ॥

उपदेश बचन ।

रमैनी ।

धरमदास पहुँचे गृह आई । सामग्री उपदेश मँगाई ॥
चौका साज थार रुचि धरहू । सर्वविधान शब्द तनकरहू॥
पुनि साहेबके चरन पखारा । कर आरति आसनबैठारा ॥
नरियर मोर हंस गहि लीना । सतसुकृतका मालुम कीन्हा
रूप हंसका दियो लखाई । जाकी शोभा वरनि न जाई ॥
प्रेम सहित चरणोदक लीन्हा।शब्द सुरतिमें गहिचितदीन्हा
जम तृणतोर दीन परवाना। लै प्रसाद हिरदयसुखमाना॥
सात दण्डवत कीन्हों जबहीं।मस्तक हाथ दीन प्रभु तबहीं
धरमदास चित हरख समाना । उपजा हिरदय निर्भयज्ञाना
सतगुरुकीजबसुरतिसमानी। विनस्योकरमभरमजभखानी

साखी ।

सत्तनाम सतगुरु धनी, सतसाहेब सरदार ।
सारशब्द हंसा गहो, छोड़ा भरम विकार ॥

सतगुरु बचन ।

रमैनी ।

जब गुरु पूर मिलै मतसारा । उदयज्ञान रबि छावै तारा ॥
तब उँजियार होय घर भाई । धोखभरम सब जाय नसाई॥
तातें गुरुपद सुरति समावै । सतगुरु ध्यान अभयपद पावै॥
गुरुतें अधिक काह ठहिराई । मुक्तिपंथ गुरु बिन नहिं पाई॥
रामकृष्ण तीनों पुर राजा । तिन गुरु बंधकीन निज काजा
देवऋषी मुनिवर सुख देशा । सबन बंदि गुरु चरन सुरेसा
तन धर गोरख काहु न मेटा । गुरुगम सबै सार पद भेंटा॥
मूरुख जीव नहीं गुरु मेला।बिन गुरु जगत कालको चेला ॥
गुरु बिन सारज्ञान नहिं पाई।ज्ञान बिना नहिं आप चिन्हाई
जोहियआपआप गमनाहीं।तबलगजिव बहु भटकाखाहीं

साखी ।

गुरुकी महिमा अधिकहै, सतगुरु अगम अपार ।
शब्द सनेही सिक्ख है, उतर जाय भवपार ॥

रमैनी ।

धरमदास तुम शब्द बिचारो । सर्ब माहिं यक ब्रह्म निहारो॥
ब्रह्म देह धरि जीव सतावै । पाँच सबाद रुचि जिव दुख पावै

निज घर डोरी छूटै भाई । जीव रहे मनमति अरुझाई ॥
गुरु तो सारशबद बतलावै । जमतें छोड़ाय जीव मुक्तावै॥
सतगुरु मिलै डोर घर पावै । पाँच चीन्हि परपंच मिटावै॥
आपहि जीव ब्रह्महै भाई । गुरु परिचय बिन लखा न जाई
निःअक्षर लख तत्त बिदेही । सत्तनाम गहु मिल सुख जेही
जब लग तनमें ब्रह्म सोहंगा । तबलग रहत न मन बहुरंगा॥
परिचय दया जबै उर आवै । सतगुरु सेव परमपद पावै ॥
पूजहु सरजिव साध अमोला । लहै अभयपद निःचलमूला

साखी ।

जप तप जग बहु कीनिया, अंत गये सब हार ।
सतगुरु दरस न पाइया, लाद चले जग भार ॥

रमैनी ।

धरमदास सुन आपन करनी।तुम सुकृत आये जिव तरनी॥
पुरुष पठायो जिवके काजा । तुम पर जाल कीन जमराजा
तब पूरुष आज्ञा मोहिं कीना।ततक्षिण आयपृथ्वीपग दीना
बार अनेकन कीन्ह मिलापू । धरमदास नहिं चेतो आपू॥
पाहन पूजिध्यानमन लायो।सतगुरुशब्दचीन्हिनहिंपायो॥
तासु प्रीतितोहिं आनजगावा।नाम प्रताप यही प्रभु लावा॥
जो जिवनाम तुम्हारा लैहै । ताहि जीवको काल न खैहै ॥
सतगुरु भक्ति जाहि कुल होई । तरै इकोतर पुरखा सोई ॥
यह संयोग तोहिं हम भेंटा । जन्म मरन दुख दारुन मेंटा ॥
धरमदास परखो चितलाई । विप्र गुष्ट तोहिं बरनि सुनाई ॥

साखी ।

विप्र गुष्ट जैसे भई, सो सब कहौं बुझाय ।
सारबचन निज परखहू, कहि कबीर समुझाय ॥

कथा सर्वानन्द ।

रमैनी ।

सर्वानन्द नाम द्विज रहेऊ । तासम ज्ञान और नहिं कहेऊ ॥
बहु पंडित सो गुष्ट पसारी । काहु न जीत गये सब हारी ॥
जित चर्चा पंडित सो कीना । ज्ञान जीत पोथी बहु लीना ॥
गुष्ट जीतके जब घर आये । बहुअभिमान गरभ चित लाये ॥
माता सों तब बच्चन उचारा । हे जननी बड़भाग तुम्हारा ॥
हम अस पंडित सुतहैं तोहीं । काहू न जीत गुष्टसों मोहीं ॥
सर्बजीत नाम मम धरहू । तिलक जीत मोरे सिर करहू ॥
कहि माता सुन पुत्र प्रबीना । सरबजीत तुमका हम चीना ॥
ए सुत एक मैं बूझौं तोहीं । कहु कबीर जीता की नाहीं ॥
हे जननी तुम ज्ञानहु ताना । कहा सम्बाद जोलाहा जाना ॥

साखी ।

पंडित कोइ जीते नहीं, ज्ञानी ठहरे नाहिं ।
नाम मोर सब जगतमें, जोलहा बाद बड़ाहिं ॥

रमैनी ।

कह जननी कहवैतोहिज्ञानी । जब जोलहा जीतौ बहुबानी ॥
जोलहा जीति आव तुम जबहीं । सर्बजीत हम कहवै तबहीं ॥

तुम सिर करब तबै हमटीका। बिनजोलहा जीते बुधफीका॥
कहां कबीर रहै हो माता। कौन भेष बानी है ताका॥
हे सुत वै काशी अस्थाना॥ अविगत लीला कहा बखाना॥
जोलहा नाम कबीर बतावै। भक्ति भेष भल हरगुन गावै॥
जब जननी बहुतै धिक्कारा। बाढ़ा क्रोध हिये बिकारा॥
कीन प्रणाम बहुत अभिमाना। काशीका तब कीन पयाना
तहाँ कमालिन जलको गयऊ। पंथबिप्र तेहि बूझे लयऊ॥
हे माता मोहिं कहो बुझाई। कबिरा जोलहा कहाँ रहाई॥

साखी।

जोलहा नाम कबीर है, घर कौने अस्थान।
हम आये हैं मिलन कूँ, ताका भेद बखान॥

रमैनी।

बिहँसिकमालिनकहियकबानी। कोथरगम्मकबीरकोजानी
तीन देव तेहि पुर अधिकाई। ते कबीर घर गम नहिं पाई॥
सुर नर मुनि औ जहँ लग देवा। वे घर काहु लहै नाहिं भेवा॥
बीचहि अरझ रहे जम फाँसा। चीन्ह न पायो अबिचलसाथा
धाम कबीर जहाँ है भाई। तहाँ न जमराजा गम पाई॥
जाहि दया सतगुरुकी होई। घर कबीर गम पावै सोई॥
द्विज चक्रत कन्या सुन बाता। यह तो अचरज अहै बिधाता
ए कन्या निज कहो प्रगासा। धाम कबीर प्रगट कहो बासा
काशी माहिं रहे केहिठाई। देहु चिन्हाइ भवन हम जाई॥
चल द्विज तोका भवन लखाऊँ। कहो सो जाय सँदेशसुनाऊँ

साखी।

जो कुछ तुम आज्ञा करो, कहूँ सँदेशा जाय।
दास कबीर एक पुरुष है, ताका भेद न पाय॥

रमैनी।

तब सर्बानंद कीन बिचारा। जोलहा ज्ञान देख यहि बारा
जल पूरन बरतन भरि लेहू। लै कबीर आगे धरि देहू॥
कहै सो मोहिं सुनावहु आई।सो कन्या यह सुनिचितलाई
सुनि मुखतें बरतन धरि देहू। जस कछु कहै सोइ मोहिं कहेऊ
कन्या गुरु पहँ चली तुरंता। बिप्र ठाढ़ द्वारे बुधवंता॥
कहा बिप्र एक द्वारे आवा। सो मोहिं तुम्हरे पास पठावा
तिन जलपात्र दीनमोहिं पाहीं। बचन सँदेस कहाकछु नाहीं
उठे कबीर सुई यक हेरा। जलमें डारि दीन तेहिं बेरा॥
कन्या बरतन बिप्रहि दयऊ। ता पाछे हमहूँ चलि अयऊ॥
जाय द्विजै जल बरतन दीना।कन्या बूझ विप्र तब लीना॥

साखी।

लेहु विप्र तुम जान, दीन सँदेसा पुरुषके।
तुम हौ विद्यामान, बूझि लेहु मन परखके॥

रमैनी।

हे कन्या कस कहे विचारा। भाष सुनावो सो उपचारा॥
कन्या कहै भाख कछु नाहीं। सुई एक डारा जल माहीं॥
पण्डित मूरुख मरम न पावा। कहत न बूझै सुई प्रभावा॥

अगुन छगुन करही हिय माहीं।तब हम तुर्त गये द्विजपाहीं॥
कुशल प्रसन्न बूझे सुनि वानी।कहो पंडित सो मोहिं बखानी
पठये जल भरि अस अनुमाना। हम हैं विद्या पूर अघाना॥
जिमि जल वर्तन नाहिं समाई।तिमि हम विद्या रहे अघाई॥
तब हिय गम ज़ाना द्विजराई। दीनो तबै सुई जलनाई॥
तोहि विद्या सम्पूरन भाई। शब्द हमार बेध तोहिं जाई॥
सुन पंडित चितसम्भव आना।इनमा अहै अगम कछुज्ञाना॥

साखी।

विप्र सोच मनमें भई, करि हिर्दे अनुमान।
कैसो ज्ञान कबीर है, कौन करत परमान॥

रमैनी।

तेहि छिन रहो हृदय अनुमानी।प्रातहि करब गुष्ट हमठानी
रातसमयद्विजआसनकियऊ।भावसहितभोजनजलपियऊ
सकल रैन बहु शंका ठाना।आलस निद्रा सब बिसराना॥
चितमाँबहुतगुनावनकीना।बहुविधि ज्ञान ठानतबलीना॥
सर्वाजीत नाम है मोरा। बहुत बुद्धि हमरे नहिं थोरा॥
बहुतक ज्ञान कीन हम भाषा।आदि अंत मध एकनराखा॥
जीत जोलाहा लेब बड़ाई। जगमा कोऊ नहिं ठहराई॥
माथे तिलक देब हम तबहीं। नाम कबीर मिटाउब जबहीं॥
करत विचार होत परभाऊ। उठे सेजसे नित्त सुभाऊ॥
जल भर झारी चले तुरंता। तजतसरीरमल सोंच अनंता॥

साखी।

जहँ पंडित बैठे रहे, धरके सिरपर हाथ।
मल त्यागन हमहूँ चले, बैठ गये सँग साथ॥

कबीर सर्वानंदगुष्ट।

रमैनी।

रामराम द्विजको हम कहेऊ।सुनतहि विप्र हिये अतिदहेऊ॥
भयेकिरोधित तब परस्योजल।इच्छाजुगुत तज्यो नाहींमल
कहे विप्र देखा तुम ज्ञाना। जोलहा जात अहौ अज्ञाना॥
ऐसे समय राम तुम बोले।काह कहूँ हरि त्रास न डोले॥
अहो विप्र मोहिं कहो बुझाई।कवने समय राम लवलाई॥
कहै सर्बानंद सुनहु जोलाहा।करम नित्त भाषो तुम पाहा॥
वेद प्रमान लै माटी पानी।तब मुख सुद्ध राम जप बानी॥
अहोविप्र अस जो तुम करही।तो मुख सुद्ध विप्र सुचि रहई॥
कहै विप्र है वेद प्रमाना। तो मुँह होय पवित्र सुजाना॥
यह सुनि गये सुरसरी तीरा। कर पग मंजैं मुखदै नीरा॥

साखी।

नदी किनारे बैठके, हाथ पाँव मुँह धोय।
कर शरीर शुद्धी तबै, चले विप्र ढिग सोय॥

रमैनी।

पानी कर पग मञ्जन कीना।कर पखार जल कुल्ला लीना॥
कुरला कर द्विज बचन प्रमाना। यहकुरलाद्विजऊपरताना

चौंक उठे द्विज यह काकीना। फिरजोलहातुमजातकमीना
हेसर्बानन्दमुखसुचिभयऊ।कुरला कीनअसुचितर गयऊ॥
मुखसुधजलपरसंगतुमभाखा। तुम्हरे कहे हृदयहमराखा ॥
ए सर्बानंद तुम बड़ज्ञानी। एतना मर्म तुमहूँ नहिं जानी ॥
रजऔबीर्जनरककीदेहीं। सदा असुचि सुचि नाम सनेही॥
जो मन तजत प्रान कर गवना।करमुख सुध हरजपियेकौना
पुनि द्विज मज्जन लाग शरीरा।तब बरतन एक लीनकबीरा
गोबर घोरि ताहि भरि लीना।बरतनके मुख ढकना दीना॥

साखी।

भर्म ज्ञान जब विप्रका, देखा अधिक बिचार।
तब कबीर परगट किया, ज्ञान निखण्ड अपार ॥

रमैनी।

लैकर त्रिण मञ्जे पुनि ताही। झलकैअधिकप्रगट मल नाहीं
कहे सर्बानंद सुनो कबीरू। सुन्दर बरतन बहु मतिधीरू ॥
केहि कारन अब मंजै भाई। मल नाहिं तनको परै लखाई ॥
सुनि पण्डित नीके तुम कहेऊ।ऊपरशुचि अंतर मल रहेऊ॥
मोहरा खोलि उलट देखलावा। सर्बानंद देखि घिनआवा॥
सुनि सर्बानंद अस्थिर बाता।अंतर मैल प्रगटसुचिगाता॥
जल मंजन तन मैल नसाई।मनमल कहो कौनविधिजाई॥
विन गुरुज्ञान न मन सुचिहोई। रैन दिवस तनमाँजै कोई॥
काम क्रोध तृष्णा हंकारा।लोभ मोह मन मलहिविकारा॥
परनिंदा परघात अनीती।मन रहु असुचि करमकर प्रीती ॥

साखी।

इंद्री भीतर मल भरा, मलमुत बनी शरीर।
देह त्यागि विन सुधि नहीं, पंडित भरम गँभीर॥

रमैनी।

सर्वानंद मगन तव भयऊ। पै उत्तर कछु नाहीं दियऊ॥
पुनि लागे जल तरपै सोई। चित निश्चल मनथिरनहिं होई॥
हम जल उलचै लाग करारा। सर्वानंद पुनि हमै निहारा॥
कहैं सर्बानंद सुनि मतिधीरू। केहिकारन उलचतहौनीरू॥
कहैं कबीर सुन विप्र सुजाना। फुलवारी गुरुकेर झुराना॥
तेहि कारन हम उलचैं नीरू। सुन पंडित कथकहैकबीरू॥
कहैं सर्बानंद यह अनरीती। बात अगम कहहूविप्रीती॥
कहँधौं फुलवारी है भाई। जल सुरसरिमहिं जात समाई॥
कहैं कबीर सुनि पंडितराजू। तुम जल उलचे कवने काजू॥
कहि सर्बानंद सुनो गोसाँई। देव पित्र जलतृपितअघाई॥

साखी।

पुत्र पित्र जल देत हैं,मरे पै खाँडो खीर।
कहैं सर्बानंद तरनको, मानहु वचन कबीर॥

रमैनी।

सर्बानंद कहो यह मोहीं। कहाँ पित्र हैं बूझौं तोहीं॥
कहैं सर्वानंद सुनौ सुजाना। देव पित्र सुरपुर अस्थाना॥
कहैं कबीर जल ठांव रहाई। देव पित्र कौनेविधि पाई॥

कैधौं जलहि रहे तुम पुरखा। पढयौ वेद पै लख्योन मुरखा
हमरी असमति जानी भाई। साधुनमहँप्रभु प्रगटदिखाई ॥
जहँ हरि तहाँ पित्र अरु देवा। सबै तृपित साधुनकी सेवा॥
कहँ अंते प्रभु खोजौं जाही। हम देखा संतनके माही ॥
हरि औ संत दुईजिन जानो। प्रभुका संतनमा पहिचानो॥
अस प्रतीति आनहु उरमाहीं। साधनतजि प्रभु अंतेनाहीं॥
जैसे बृक्ष बृक्षकी छाया। अस हरि संतन माहि समाया॥

साखी।

पंडित करहु बिचारि, हरि पूरन सबमें अहै।
कहैं कबीर पुकारि, ज्ञानदृष्टि निरखत रहै ॥

रमैनी।

रह्यो मौन होय कछू न बोला। ज्ञाता शब्द परखि हिय डोला
उन चौका दै सिला खँडावा। प्रतिमा पूजन काम न लावा ॥
नित्य नेम बहु करै बिधाना। तहँवाँ हम आयस अस ठाना ॥
मूरतिका पूछ्यौं कुशलाता। कहै न मूरति मुख कुछ बाता॥
हो पंडित कस देव तुम्हारा। एकहु बात न सुन्यो हमारा ॥
साज मिठाई धरे तुम आगे। खाय न मूरति परम अभागे॥
नाककान मुख श्रवन न श्वासा। कहु कौनेबिधि करै गिरासा
तजै बोलता जड़ लवलाई। जड़ पखान सेवा केहि पाई ॥
मूरति सिरज्यो पूजो ताही। इनते शृष्टि वही पुनि आही॥
सिरज्यो पात तोर तुम आना। सो लै निर्जिव पूजा ठाना॥

साखी।

मूरतिको क्या पूजिये, मूरतिहै बिन जीव।
जनम सिराने पूजिके, मिले न तबहूँ पीव॥

रमैनी।

हो पंडित तुम आपन चीन्हा॥बिन गुरु ज्ञान चक्षुके हीना॥
लगमा ब्याह करै जो कोई।आपतें अधिक होय जो सोई॥
आपतें श्रेष्ठ मिलै जबनाहीं।तो निज सम नर खोजमिलाहीं
तुम सिर्ज्यो घट ब्रह्मसमाई।कस निर्जीव कियो मनलाई॥
में तोहिं कहूँ सुनो हो देवा।जीव अमर है अलख अभेवा॥
जीव अमर तन बिनसै भाई। तन धर जीव बहुत दुख पाई॥
अमर नाम जब जीवै भेंटै। जनम मरनको संशय मेटै॥
अमर नाम सो खोजोभाई।जेहि प्रताप जम निकट नआई॥
अमर नाम सत पूरुष सारा। सत्तपुरुष वै लोक मँझारा॥
अमरलोक सतलोकके आहीं।तीनलोक परलयतर जाहीं॥

साखी।

जीव अमर है पंडिता, जग माया फरफंद।
कहैं कबीर सुख दुख मिलै, यह शरीर सम्बंध॥

रमैनी।

किरतम कला नाम धर जेते। जनम मरन परलय बहु तेते॥
जासों चोलना अम्मर भाई। तासों नाम अमर सुखदाई॥
अमर देह सत पूरुष आहीं। वै नहिं आय गरभके माहीं॥
जो सतगुरु पद रहै समाई। ते हंसा सत लोकै जाई॥

अमर नाम सतगुरुसे पाई । सतगुरु अस्थिर ध्यान कराई॥
भूत भविष्य जपै नर कोई । बर्तमान बिन मुक्ति न होई ॥
बर्तमानमा सब है सारा । सतगुरु भवतारन कँड़िहारा ॥
जागृत स्वप्न सुषोपति तुरिया।जागृत अहै सजीवन मुरिया॥
जाग्रत गहै तुरिया सो पावै। स्वप्न सुषोपति जग भरमावै॥
पुरुष बिदेह तुरिया अस्थाना। जागृत ब्रह्म देहमा जाना॥

सारवी ।

जागृतमें सोवन करै, सोवनमें लवलाय ।
सुरति डोर लागी रहै, तार टूटि नहिं जाय ॥

रमैनी ।

पुनि जलपान करन तिन चाही।जल माटीके बरतन आहीं
करवा छुइ हम लीन्हा भाई । सर्बानंद चितै सकुचाई ॥
कर करवा लै रहि मुख चाहीं।भरम बडो जल अँचवै नाहीं॥
कहे छुये मम बर्तन स्वामी। हम ब्राह्मन जल कीन अकामी
कहैं कबीर यह अचरज बाता।उलटी रीति अपंथ जगजाता
विप्रित कथा कहूँ केहि भाई । राजा पंडित सब अन्याई ॥
सब जग पड़ा भरम दिनराती।करम धरम अरुजातअजाती
धन पंडित हौ धन तुम बेदा । लखा न काहू सतमत भेदा॥
हे पंडित यह कहो बुझाई । उत्तम मध्यम कोहै भाई ॥
सुन बानी चित भये अँजोरा।सीस नाय तिनकर जगजोरा

सारवी ।

अस्थि मांस त्वचा रुधिर, तत तिरगुण एकसार ।
छूत कहांसे ऊपजी, पंडित करो विचार ॥

रमैनी।

बिप्र ब्रह्म तब कौन बिचारा। सर्बब्याप कीनो विस्तारा॥
फिर पंडित मन अस बौरानी।सार असार न एकौजानी॥
तब उन असुभकरम एककीना।धरमदास तुम सुनो प्रबीना।
अजिया सुत एक गुप्त मँगाइस।गुप्तहि ताकर गरा कटाइस॥
गुप्त रसोंई मांस बनाई। बहु बिधि अंतर कपट दिवाई॥
पुनि चौकामें बैठे जाई। हाड़ एक कर लीना भाई॥
तेहि पीछे हम पहुँचे जाई। मोही देखत तुरत लजाई॥
कहैं कबीर सुनो द्विजराई। हमसों अंतर कपट कराई॥
गुप्त अकर्म करै नर कोई। प्रभुसे नहीं छिपै पुनि सोई॥
पाप पुण्य नहिं छिपैछिपाये।लाख जतन कोइ राखछिपाये॥

साखी।

हिरदे करहु बिचार, हे नर बावर मंदमत।
गहै अभक्ष बिकार, दुष्ट जीवकी अधमगत॥

रमैनी।

तुमअस सुरतिधारचितज्ञानी।कसनहिंचलोबाटपहिंचानी
धन्यधन्य तुम पंडित राजू।तुम ब्राह्मन यह काकर काजू॥
कर अस्नान तिलकअति नीको।काँधजनेउचालबिनफीको
उत्तम जात चाल बिन नीचा। छुवै चमार घालजलसींचा॥
किन अस करम कीनकहु मोही।द्विजकी चालनदेखौंतोही
हे पंडित तोहिं दया न आई। काहे परगर काटौ भाई

करम कसाई बिप्र कहावो । मानुष देहीं बाद गँवावो ॥
सर्ब दया भाखो भगवाना । कस नाहिं बूझे कहो सयाना॥
गीता भगवद देखि बिचारी । जीवदया भाषो बनवारी ॥
जीव दया जेहि हृदय न आई।कहैं कबीर सो पूर कसाई॥

साखी ।

का नर कीट पतंग, जग साहब भरिपूर है ।
दया हीन मति भंग, सूकर कूकर कूर है ॥

रमैनी ।

जिभ्या स्वादकाजजिवखोवा। जान बूझिके जनमबिगोवा
भूले मूढ़ जगतके ज्ञानी । तुम्हरी दृष्टि देख बौरानी ॥
सर्बानंद रहे सकुचाई । कर बिचार पद सीस नवाई ॥
मैं भूल्यों बिद्या अभिमाना। अबहिय बेध शब्द सहिदाना
अब मोहिंशरनदेहु तुम स्वामी।कृपा करो तुम अंतरजामी
पुस्तक बहुत आन घर आगे।दीन बचन बहु अति अनुरागे
तब रामानंदपै ले गयऊ । गुरुकी दिक्षा ताहि दिवैऊ ॥
भगतभेष तिन दीनो भाई । गुरु दृढ़ करै सदा सेवकाई ॥
गुरुसे बिदा माँगि दिन एका । जननी पहाँ चले मथटेका॥
जाय भवन निज पहुँचे जबहीं । जननीके पग लागेतबहीं ॥

साखी ।

धन माता सुखदाइया, दीनो अस उपदेश ।
साहेब कबीर गुरु मोहिं मिले, मेटो काल कलेश ॥

कथासमाप्त ।

सतगुरुवचन ।

रमैनी ।

धरमदास तोहिं कहि समझावा।सर्बानन्दसे जो बनिआवा
निरखो सुरति नाम लवलावो।तनछूटेसतलोक समावो ॥
जीवन शब्द चेतावहु भाई । चेतै जीव पुरुष लवलाई ॥
जो जीवन सतशब्द दृढ़ावे । सो वो सतपुरुष मनभावे ॥
मायाविनजिवरोकनराख्यो। हंसा बोध नाम असथाप्यो ॥
धन सम्पति सेवक ग्रह आही। अरपै सबै संत जो चाही ॥
जो मायाको जोगवा भाई । नहिं साहेबके स्वारथ लाई ॥
वह जिव बावर नरकै जाई। सक्ति माहिं जोराखि छिपाई॥
सो जिव अंत बहुत दुख पावै।भक्तिहीन जम नाचनचावै॥
जगमें सेवा बस भगवाना । धरमदास यह बचन प्रमाना ॥

साखी ।

सुरत रहै वह देशको, धरै साहेबका ध्यान ।
कहैं कबीर वह अमर है, पावै पद निर्बान ॥

धर्मदासबचन ।

रमैनी ।

हे साहेबतुमदीनदयाला । दयासिंधु दुख हरन कृपाला ॥
हे साहब पद गहु अनुरागा।हेप्रभु तुम मोहिं कीन सुभागा॥
मैं बावर गुरुहीन कुचाली। तुम दीना मोहिं पंथ निराली॥
रस ना एक अमित प्रभुताई।अमित रिसाल बरनिनहिंजाई

जे सेवक पर हो तुम दाया । ताके हृदय कुमतिकसआया॥
पूरन भाग करै सेवकाई । धन सेवक जिन गुरुहि रिझाई॥
मैंजग बँध्यो अजोग विचारी।अधमजानतुमलीन उबारी॥
अब यह दया करो सुखदाई । दुइ सेवकके दरसन पाई ॥
हे प्रभु उन मोहिं बड़ सुखदीना।भरमत भरमराखउनलीना
विरह सिंधु बूड़त मोहिं राखा।उन दरसनकीहैअभिलाखा

साखी ।

प्रथमै दुतिया प्रघटें, धरे साधका भेष ।
तिन दरसनकी चाह है, बसैं सो कवने देश ॥

कबीरधर्मदासवचन ।

रमैनी ।

धरमदास तुम दरसन पैहो। लीला देखि छकितहोयजैहो॥
आपसे प्रगट रूप दिखलाया। एक दीन होय एक समाया
लीला लखि चक्रत भय दासा।पुनिविनतीएककीनप्रगासा
धन साहेब तुम अविगत नाथा।मोहीनिसदिनराखोसाथा
हे प्रभु अविगतकला तुम्हारी । हमहैकीटजीवविषचारी ॥
सत्तलोक तुम बरनि सुनावा । शोभा पूरुष हंसबतावा ॥
कैसा देस राज वह आही । चित इच्छा प्रभु देखनताही॥
धरमदास यह निर्घिन काया।यह तन पुरुषदरसनहिंपाया
जब ठेका तन पूरा होई । सत्तलोक तब देखो जोई ॥
धरमदास तब चरन निहोरा । हे प्रभु तिरखा मेटो मेरा

साखी।

तुम समदृष्टी सर्व मय, हम हैं सिक्ख अजान।
सत्तलोक दिखलाइये, मन बिच अधिक समान॥

रमैनी।

धरमदास यह हटका करहू। मानो शबद शीशपरधरहू॥
हम पूरुपसो ऐसे अहई। जलतरंग जस अंतर रहई॥
जिमरविअरुरवितेजप्रकासा। तिममोहिंपुरुपबीचधर्मदासा
जो जीव शब्द हमारा जानै। सो हंसा सतलोक पयानै॥
हमरी सुरति गहो चितलाई। तब पूरुष पद दरसन पाई॥
जो सेवक गुरु करै प्रशंसा। कहैं कबीर सो निर्मलहंसा॥
अस परतीत सिक्ख उरआनै।गुरु औ पुरुष भिन्ननाहिं जानै
जबलग चित अस रीत न आवै।तबलगजीवनलोकसिधावै
हे साहेब मैं विजवहुँ तोहीं। पुरष दरस बिनकलनहिंमोहीं॥
तुम बरन्यो सतलोककी शोभा। तातें सुन मोरामन लोभा

साखी।

हे प्रभु चिंता मेटहू, कलन पड़ै दिन रैन।
बिन देखें वह देसके, नहिं होवै सुख चैन॥

सतलोकबरनन।

रमैनी।

धरमदासजोअसचितकीन्हा।तन तजचलोचलेपरवीना॥
राख्यो तन लै गवन्यौ हंसा।जहँ पहुँचे तहँ काल न संसा॥

पलनिमेषमें पहुँचे जाई । अविगत लीला लखै को भाई
शोभा लोकदेखि मनमाना । उदितअसंखन ससिऔभाना
जित देखैं जगमग झलकाहीं । देखत छकित भये मनमाहीं
द्वारिपाल जो हंसा रहिया । तामें एक हंस अस कहिया
यह हंसा तुम जाहु लेवाई । पुरुष दरसकर आनहु भाई
चले लेवाइ पुरुष पहँ जबहीं।जगमगहंस देखिसब तबहीं॥
करहि कलोलवा मंगलचारा।सोभाअद्भुत अगमअपारा
हंसन सोभा काह बताऊं । सत्तभाव लो बरन सुनाऊं ॥

साखी ।

सोभा हंसन देखिकै, सुख नहिं हृदय समाइ ।
नैनन निरखत रूपको, देखि देखि मुसकाइ ॥

रमैनी ।

जगमग रूप हंसके करही । अमल क्षीर बहु शोभा धरही
हंसभाल सोभा किमकहेऊ । खोड़िषभानुचंद्र छबि लहेऊ
सुकृत परतरोम परकासा । हीरामन जो उदित रोमासा॥
कंचन कलस जडतमन लोना।रतन थारआरत महँ सोना
हंस मगन सुख शब्द उचारा।करत कलोले तनमन वारा॥
सुरतिहंसके आगे लीन्हा।निरति करत चलि हंस प्रबीना
सिंगासन छबिदेखत मोहा।अदभुतअमितकलातिनसोहा
क रोमके कला अनंता । बरनत कोई न पावत अंता॥
करोम रविससि कोटीसा। नखकोटिनविधमिलनरवीसा
पुरुष प्रकाश लोकआँजोरा । तहँनहिं पहुँच निरंजनचोरा

साखी।

जोत अगाध अनूप है, कोटि भानु ससि भेर।
कोटि चंद्रमा थकित भे, ऐसे परम उँजेर॥

रमैनी।

पुरुष कबीर देख एक भाई।धरमदास पुनि रहे सकुचाई॥
पुरुष दरस कर आये तहँवा। प्रथम कबीर बैठ रहे जहँवा॥
यह कबीर बैठे पुनि देखा। पुरुषकला तिन एक बिसेखा॥
कस अजुगुत तुम कीनो भाई।वहाँ मोहिं परतीतिनआई॥
पुरुष कबीर वहाँ एक छिपाये। सत्त पुरुष जगदास कहाये
धाय चरण गहि चितअकुलाये।हे प्रभुअब परिचयहमपाये
यह सोभा कस उहाँ दुरावा। काहे न जगमें प्रगट दिखावा॥
धंर्म न जो यह छबि जग जाई।कम्पित होय निरंजन राई॥
सबयजीव तब मोहिं लवलावै।उजड़ै भव सतलोकहिआवै
ताते गुप्त देखि जग माहीं। शब्द सनेही जिव समझाहीं॥

साखी।

धरमदास लेउजान, हम वै एक अस्थानही।
रहो शबद परमान, हम उन कछु अंतर नहीं॥

रमैनी।

शबद परख चीन्हैगा कोई। कर परतीति घर पहुँचै सोई
कहै कबीर सुनि सुकृत अंसा। दरस्यो लोक मिटे सब संसा
अब तुम चलो बेगि संसारा। जीव चेतावहु कर उपकारा

हे साहेबअब वहाँनजाई । यह सुख घर तजिकहाँसिधाई॥
वह जगदेस अपरबल काला। नहिंजानों मत होय बिहाला
धरमदास तोहिं अंतर नाहीं । हम तुमरे सँग सदा रहाहीं
तुम देखो सतलोक प्रभाऊ । हंसन कहा सँदेश सुनाऊ ॥
मान्यो शबद सीस पर राखा । लैके चले सुकृतै भाषा॥
पलछिन महँ जग्गहिचलिआये।बैठि देखि धर्मनअकुलाये
परचौ चरन गहिसाहेबकेरा ।कर बिनती पद कहिमुखबेरा

साखी ।

अबिगति अगम अथाह जल, निर्गुणसर्गुण आदि ।
को तुम पावै थाह जग, गुप्त प्रगट आनादि ॥

रमैनी ।

कीटतें भ्रंग मोहिं प्रभुकीना । निश्चय रंग आपनोदीना॥
पारस परमलोहजिमिइीमा ।तिमिमोहिंकियेनाथव्रतसीमा
हे प्रभु तुमसे भयो अनंदा। जिमि चकोरहरषै लखिचंदा॥
जनम मरणबहु संकट नासी । तुमचरनाबिंद सुखरासी ॥
हे प्रभु आसिष दीजे मोहीं ।एक लव नहीं बिसारों तोहीं॥
जस मंसा तस आगे आवे । कहैं कबीर दूजा नहिं भावे ॥
धर्मन गुरहि दोष दे प्रानी । अपनी कर नर आपनहानी
जो गुरु वचन गहे चितलाई।व्यापे नहीं ताहि द्विजताई ॥
जो गुरुबचन सीस संयोगा । उपजे ज्ञान नासभ्रमरोगा ॥
पूँजी साहु सौदागर लावे । पूँजी जोगवे लाभ उठावे ॥

साखी।

सतगुरु साहु संत सौदागर, पूँजी शब्ददुकान।
सिष साँचा गाहक भया, लाभ होय नहिं हान॥

रमैनी।

जो गुरु शबद गहै विसवासा। गुरु पूरा पुरवै सब आसा
बिन बिसवास पाय दुखचेला। गुरुके शब्द करै नहिंमेला
निडर होय तो निज घर जाई।सूरा होय नाम लवलाई॥
तजनरभुम्मटरैजोभाई। सो जिव निश्चय जम घर खाई॥
कसै कसौटी रहै जो हंसा। कहैं कबीर वो निर्मल बंसा॥
संत असंत दोउ होय बड़ाई। कादर बचले सूर लडाई॥
धरमदास तोहि बहुत बुझावा।रहनगहनसतपंथलखावा॥
माया ठगिणा अहै रे भाई। ये काहूके संग न जाई॥
अभ्यागत जो आवै द्वारा।सत असंत कुछ नाहिंबिचारा॥
भिक्षा देहु हरखके ताहीं। यह सम जोगजुगतकुछनाहीं॥

साखी।

हे प्रभु रंक होय या राव, दासा अभ्यागत तनय।
निसिदिन रहै उदास, केहि प्रकार सेवा बनै॥

रमैनी।

सुन धर्मन बिनती जो भाषी।सुकृतअंछितकछू न राखी॥
तन बस्तर लै भेंटै भाई। जो असक्त तो काह कराई॥
आपन खाय तो और खवावै। नहिं तो एक संग रहि जावै॥

तीर्थ बर्तजप तप बहु कर्मा।कहैं कबीर सब मनको धर्मा॥
मानै गुरू साथकी बानी। कहैं कबीर शब्द सहि दानी॥
सत्य शब्द गहि मिटै उपाधू। कहैं कबीर संग सतगुरु साधू
सत्य नाम गहु तज द्विजताई। कहैं कबीर मैं ताहि सहाई॥
सत्तनाम गहि चीन्है जोई। कहैं कबीर जो गुरगम होई॥
को हमको तुम कोहै अंता। कहैकबीर यह बूझो संता॥
सो हमसो तुम सोहै अंता। कहैं कबीर गुरु पारस संता॥

साखी।

एक समाना सकलमें, सकल समाना ताहि।
कबीर समाना बूझमें, तहां दूसरा नाहिं॥

रमैनी।

सतचित सतगुरुको ध्याना। कहैं कबीर सतगुरु परवाना॥
सतगुरु शब्द ज्ञान गुरु पूजा। कहैं कबीर लख मोहींकूँजा॥
कुंज माहिं मोहीं ठहरावै। कहैं कबीर सो संत कहावै॥
संत कहाय जो साधै आपा। कहैं कबीर तेहि पुण्यनपापा
पुण्य पाप नहिं मान गुमाना। कहैं कबीर सो लोकसमाना
जिंदा मुरदा चीन्होंजीऊ। कहैं कबीर सतगुरुनिज पीऊ॥
मुर्दा जग जिन्दा सत्तनामा। कहैं कबीर सतगुरु सुखधामा
कौनसो जीतै कौन सो हारै।कहैं कबीर कसकाज सँवारै
एक सों जीतै एकसों हारै। कहैं कबीर गुरुकाज सँवारै॥
इंद्रीजीतै साधसे हारै। कहैं कबीर सतगुरु निसतारै॥

साखी ।

इंद्री जीतै साधहै, इंद्रीभोग असाध ।
कहैं कबीर मन बस करै, सोहै पूरा साध ॥

रमैनी ।

सतगुरु सोइ सतनाम लखावै। सत्तलोक हंसन पहुँचावै ॥
सतनाम सतगुरु सतभाषा । शब्द गिरंथ कहि गुप्तहि राखा
बिन जिभ्याकर अमृत पाना। सत्तनाम सतगुरु गमजाना॥
सतसूरति अमृत सुख धीरा। अमी अकाश जहाँ है बीरा॥
सोहं ओहं सुख मन बीरू। धरमदास सों कहै कबीरू ॥
धारै जोग कहो निज काही । नाद सुसील लखै बहु ताही
प्रथमै नाद बिंदु सो कीन्हा। मुक्त पंथ नादै गहि चीन्हा ॥
नाद सोशब्द पुरुषमुखबानी।गुरुगम शब्द सो नादबखानी
पुरुषनाद सतषोडस अहई।नाद पुत्र शिख शब्दसोअहई॥
शब्द प्रतीत गहै जो बंसा। शब्द चारचा सो मम हंसा ॥

साखी ।

नाद शब्द घट घट बजै, उठै मधुरधुन राग ।
कहैं कबीर लख प्रेम जन, तब होवै बैराग ॥

रमैनी ।

शब्दकीचाल नाम दृढ़ गहई। जम सिर पेगदै सो निर्भयई
सुमिरन भजन टहल चित धरई।सतनाम गहि हंसातरई॥
बिन्दु होय शब्द मम धावै।शब्द डोर धरि मोहिं पहँ आवै॥

नाद शब्द बिन हंस बिगोई।संग सहित सो निज घर होई॥
कितने पढ़ गुन नरके जैहैं। कितने पढ़गुन लोक सिधैहैं॥
हेसतगुरु हम तुमरे दासा। बिनती करूँ खसम तुम पासा॥
पढ़े गुने नरकै किम जाहीं। सो चरित्र बरनो मोहिं पाहीं॥
सुन धर्मन पढ़ गुन अरथावे।शब्द कहै सो चाल न आवै॥
पढ़ गुन तत्त्व बिचारे नाहीं। ऐसे पढ गुण नरकै जाहीं॥
जिन पढ शब्दचालगहिभाई। कहैं कबीर सो लोक सिधाई

साखी।

कहता बकता जिउ तरै, सबै जगत तरि जाय।
कागा हंसा ना भया, जुग जुग आवै जाय॥

रमैनी।

धरमदास सुन शब्द हमारा।रहियो निसिदिन नाम अधारा
दुष्ट मित्र से प्रेम बढ़ैये। भक्ति भजन आनँद होय रहिये॥
जो सुख होयतो जिनउतरावै। दुखके परे नहीं बिलगावै॥
संकटमें बड़ साहस कीजे। निश्चय नाम ध्यान चितदीजे
चित निश्चिंत रहै जो भाई। तो संकट सब जाय नसाई॥
यह जम देस अहै रे भाई। दुख सुख तनधर व्यापै आई॥
यह जिउ चोर कालके अंसा। धरमराय घर करै बिधंसा॥
चाहे साधन चित्त डोलावै। डिढ परतीत नाम गुनगावै॥
काचे जीवनके यह लेखा। संकट परे बिकल होय पेखा॥
सुख सम्पति जो लोक बड़ाई। यहसपने धनजानो भाई॥

साखी ।

सपने केरी सम्पदा, जगमें फैली आय ।
कहैं कबीर कोइ जागिया, सपा श्रिष्ट नसाय ॥

रमैनी ।

धरमन सुरति हंस जो होई । गहै न दुख सुख वाको कोई ॥
सार अक्षर निर्वारै भाई। गुरु गम पंथ जो खोजे पाई ॥
पाँचौंके परपंच मिटावो । पाँच भूतके स्वाद न भावो ॥
पाँचो केरस्वादबिपजानो । गुरुगम शब्द परखिहियमानो
पाँचौहैं परबल घट माहीं । मन राजा पाँचौमें आहीं ॥
इंद्री स्वाद करम नरहीना । नारीभोग रतन तजं दीना॥
संतन श्रवन स्वाद रसबानी।शब्द भजन हिय सारसमानी
संतन त्यागैं बास कुबासा । नाम बिदेह जपै बिसवासा॥
संत सुरति अनुरागी रहई। निसिदिन प्रेम भक्ति चित बसई
सतगुरु ध्यान मनहिमाँ धरहू । सार शब्द लै भवजल तरहू

साखी ।

सार शब्द सतगुरु दिया, लखा सो सिर्जनहार ।
साहेब घट घट बोलता, कहैं कबीर पुकार ॥

छन्द ।

घर नेह बाँधो पाँच साधो सार सतगुरु ज्ञानसे ॥
यह देस है जमराजको तरिहो बिदेही ध्यानसे ॥

सतनाम सुमिरो शब्द धारो करहु मंजन तासुहो ॥
सतध्यान सतपदरूपअस्थिति घर अमर निवासुहो ।

सोरठा ।

हरख सोग बिसराय, गुरुमुख शब्द प्रतीति कर ।
अमरलोकको जाय,दया छिमा सत सील गहु ॥

साखी ।

सहस एक सत नव बढ़ी, बासठको है साल ।
चैतबदी नौमी कही, गुरु बुधि देव दयाल ॥

॥ इति ठाकुरदासविरचित कबीरउपदेश समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस ७ खेतवाड़ी-बम्बई.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेकी परमोपयोगी, स्वच्छ, शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

यह विषय आज ३५।४० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस छापाखानाकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दरप्रतीत तथा प्रमाणित हुईं। इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषय की पुस्तकें जैसे-वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, साम्प्रदायिक, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक, तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दीभाषाके प्रत्येक अवसरपर बिक्री के अर्थ तैयार रहतेहैं। शुद्धता, स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्द की बँधाई देशभरमें विख्यात है। इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशन भी पृथक् काट दिया जाता है। ऐसी सरलता पाठकों को मिलना असंभवहै। संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकों के मँगानेमें त्रुटि न करनाचाहिये. ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है)॥ भेजकर 'सूचीपत्र' मँगा देखो॥